संगत संसार

संरक्षक :

स. वीरेन्द्र सिंह जौहर नई दिल्ली

प्रबंधकीय मण्डल :

स. गुरुचरण सिंह गिल, जयपुर (अध्यक्ष)
श्री राकेश रिखी, रांची (मंत्री)
श्री विनोद गांधी, दिल्ली (कोषप्रमुख)
श्री संतोष तनेजा, दिल्ली (सदस्य)
स. रविन्द्रपाल सिंह, दिल्ली (सदस्य)
श्री सुदर्शन सरीन, दिल्ली (सदस्य)

संपादकीय मण्डल :

डॉ. कुलदीप अग्निहोत्री, हिमाचल प्रदेश
स. जगजीवन जोत सिंह आनन्द, उत्तरांचल
डॉ. अवतार एस. शास्त्री, आंध्रप्रदेश
स. कुलवंत सिंह सचदेवा, ग्वालियर
स. राजेन्द्र सिंह, फरीदाबाद

संस्थापक : स्व. रमेश श्रोत्रिय

संगत संसार कार्यालय
4/28, W.E.A, सरस्वती मार्ग,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 24505289, फैक्स : 25728030
email: sikhsangat@khalsa.com/
website : www.sangatsansar.com

सूचना : 'संगत संसार' में छपी सामग्री से सम्पादकीय मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में अनेक विद्वानों के लेखों एवम् चित्रों का समायोजन किया गया है। संगत संसार सोसायटी उनकी आभारी है।

अज्ञानतावश मुद्रण में होने वाली सभी त्रुटियों के लिए हम गुरु महाराज व संगत से क्षमाप्रार्थी हैं। कृपया उदारतापूर्वक क्षमा करें।

'संगत संसार' में प्रकाशित किसी भी सामग्री से सम्बंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्रवाई प्रकाशन-तिथि से तीन माह के अन्दर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की पूछताछ व कार्रवाई पर हम जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हैं। कार्रवाई का न्याय-क्षेत्र दिल्ली होगा। ●

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु।
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु।
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु।
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु।
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु।
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु।
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु।
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु।
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु॥

(श्री गुरु अर्जुनदेव जी रचित 'बारहमाह मांझ' से)

माघ महीने में स्नान आदि का फल उसको है, जो साधुओं की चरणरज के साथ स्नान करते हैं, अर्थात् सत्संग द्वारा परमेश्वर-भक्ति सबको बांटकर उससे जन्मान्तरों की कर्म-मैल उतर जायगी और मन से अहंकार जाता रहेगा। काम-क्रोध मोहित नहीं कर पाता और लोभ रूपी कुत्ता मर जाता है। सत्य-मार्ग पर चलने वालों की जगत् स्तुति करता है। अठसठ तीर्थों के स्नान और सम्पूर्ण पुण्य जीवों पर दया करने के तुल्य हैं। वाहिगुरु दया करके जिसे अपना नाम देता है, वहीं पुरुष चतुर है। नानक कहते हैं, जिनको अपना स्वामी हरि मिला है, उन पर मैं कुरबान जाता हूँ। माघ में वे ही पवित्र कहे जाते हैं, जिन पर पूर्ण-सतिगुरु दयालु है।●

सम्पादकीय

मन चंगा तो कठौत में गंगा

- डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

गुरु रविदास मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के शिखर पुरुष कहे जा सकते हैं। वैसे तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्ति आन्दोलन को विदेशी आक्रांताओं यथा अरबी, ईरानी, तुर्की, अफगानी और पठानी सेनाओं द्वारा भारतीय राजाओं को पराजित किए जाने की प्रतिक्रिया में उभरा आन्दोलन मानते हैं उनके अनुसार यह आन्दोलन चाहे निराशा से उपजा था परन्तु इसका उद्देश्य पराजित जाति में नई उर्जा का संचार करना था। परन्तु थोड़ा और पीछे जाकर देखा जाए तो इन विदेशी आक्रमणों से शताब्दियों पहले दक्षिण में आलवार और नायनार भक्तों का भक्ति आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था जो समय पाकर सहज गति से उत्तर में दाखिल हुआ। गुरु रविदास इसी लम्बे आन्दोलन की उपज माने जाते हैं। यही कारण है कि उनकी वाणी में समस्त भारतीय चिन्तन और मनन का जन भाषा में प्रकटीकरण हुआ है। उस परम्परा से जुड़े रहकर भी रविदास जी ने काल क्रमानुसार भारतीय समाज में उभर आई कुरीतियों को समाप्त करने का यज्ञ भी प्रारम्भ किया और विदेशी आक्रांताओं के विजय अभियान से उत्पन्न इस्लामी अनुयायियों के साथ सामजस्य बिठाने का भी प्रयास किया लेकिन यह प्रयास तुष्टीकरण के माध्यम से नहीं था बल्कि उस ईश्वर की सार्वभौमिक सत्ता को आधार बनाकर किया गया था। इस्लाम भी एक ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता है और भारतीय दर्शन भी एक ही ईश्वर की सत्ता का स्वीकार करता है। गुरु रविदास जी इस बात को बखूबी जानते थे कि पूरे ब्राह्माण्ड की सत्ता को नियंत्रित करने वाला ईश्वर या रब्ब या खुदा एक ही हो सकता है उसके नाम चाहे अलग-अलग देशों के लोग अपनी अपनी भाषा में अलग अलग क्यों न लें। चाहे ईश्वर एक है लेकिन लोग उसकी पूजा आराधना तो अपनी अपनी रूचि, स्वभाव, प्रकृति और कल्पना के अनुसार अलग-अलग ढंग से ही करेंगे। शायद इसीलिए रविदास जी ने कहा है-

रविदास उपजइ सभ इक नू तें, ब्राह्मण मुल्ला सेख।
सभी को करता एक है, सभ कू एक ही पेख॥

कर्म को आधार बनाकर प्रचलित हुई वर्ण व्यवस्था धीरे-धीरे काल प्रवाह में जन्म पर आधारित होकर कट्टर जाति व्यवस्था में प्रवृतित हो गई। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन ने इस व्यवस्था पर चोट की, क्योंकि ये लोग जानते थे जन्म पर आधारित जाति समाज को आगे जाकर बांटेगी और जो व्यवस्था कभी भारतीय समाज को कला कौशल में पारंगत करती रही वह उसके पैरों की बेड़ियां बन जाएगी। इसीलिए रविदास जी ने उच्च स्वर से पुकारा-

रविदास जन्म के कारनै, होत न कोउ नीच।
नर कूँ नीच करि डारि है, ओछे करम की कीच॥

आदमी अपने कर्म से ही ऊंचा या नीचा बनता है जन्म से कोई न ऊंचा होता है और न नीचा होता है।

आज जब भारतीय समाज अनेक राजनैतिक कारणों से जाति व्यवस्था के भीतर नकारात्मक दिशा में धंसता जा रहा है तो जरूरत है कि श्री रविदास जी की वाणी को आधार बनाकर एक नया आन्दोलन छेड़ा जाए। रविदास जी ने कहा था कि-

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग अंग बास समानी॥

अच्छे कर्मो की सुगन्ध ही व्यक्ति को ऊंचाई तक लेकर जाती है। उसी की बास उस समाज में प्रतिष्ठा दिलाती है। जन्म से कोई व्यक्ति अपने आपको जितना मर्जी ऊंचा कहता रहे, चाहे पर्वत शिखर पर खड़े होकर अपने सर्वोच्च होने की घोषणा करता रहे, लेकिन मूल्यांकन उसके कर्मो से ही होगा, जन्म से नहीं। शायद इसीलिए रविदास जी ने अच्छे कर्म करने को सबसे ज्यादा महत्व दिया है। रविदास जी आज के संक्रमण काल में ऐसे प्रकाश पुंज हो सकते है। जिसकी रोशनी में भारतीय समाज भविष्य का कल्याणकारी रास्ता तलाश सकता है।

जो असत्य है, जो कूड़ है और अहम् से उत्पन्न हुआ है, वह अस्थाई है। समय पाकर वह नष्ट होगा ही और सत्य अपने पूरे ताप से प्रकट होगा। भारतीय समाज पर जाति भेद और कुरीतियों की जो काई जम आई है और जिसे कुछ लोग अपने राजनैतिक स्वार्थों से बनाए रखना चाहते हैं, वह स्थायी रह नहीं पाएगी। रविदास जी ने भी कुसुंभ के रंग का उदाहरण दिया है-

जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु॥
मेरे रमईऐ रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार॥

सत्य का रंग मजीठ है। वह कभी झूठा नहीं पड़ता। आज गुरु रविदास जी के जन्मोत्सव पर इसी तथ्य को आत्मसात करने की जरूरत है। इसीलिए मन की साधना ही करनी चाहिए। हृदय के भीतर ही ईश्वर है, भीतर ही गंगा है, भीतर ही सत्य है। लेकिन प्रश्न उससे साक्षात्कार करने का है। रविदास जी ने वह कर लिया था, इसीलिए हम आज भी उनका स्मरण कर रहे हैं। ●

॥आनंदु साहिब॥

प्रिंसीपल, **दिलीप गोगटे**, नान्देड़

प्रभु के स्वरूप की स्पष्ट कल्पना भक्ति में अनिवार्य है। यदि ऐसी स्पष्ट कल्पना नहीं है, तो हमारा आचरण सदोष होगा। प्रभु केवल मंदिर, मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारे में हैं यह विचार संकीर्ण है। प्रभु सर्वव्यापी हैं। सभी जड़ चेतन में वे समाये हुए हैं। स्थान, महिमा और सुविधा की दृष्टि से मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारों की जरूरत है। हमें इन स्थानों में पवित्र रहना चाहिए। बाहर हम खुले हैं। कुछ भी कर सकते हैं, ऐसा सोचना अनुचित है। प्रभु सर्वव्यापी हैं। सर्वसाक्षी हैं ऐसा विचार यदि हम ठान लेते हैं और उसके अनुकूल व्यवहार करते हैं, तो बहुत से अपराध होंगे ही नहीं। भक्ति अपने आपको विकसति करने की प्रक्रिया है। गुणों की वृद्धि और दोषों का निर्मूलन करने से व्यक्तित्व का विकास होता है। अब्राहम मस्लॉ का 'जरूरतों की सीढ़ी' (Need Hierachy) नामक एक सिद्धांत है। जिसमें वे कहते हैं, 'अन्न, वस्त्र, निवास ये मनुष्य की मूलभूत जरूरतें हैं। मनुष्य की अंतिम जरूरत है-आत्मसाक्षात्कार (Self realization)। भक्ति मार्ग में भी आत्मज्ञान या आत्मसाक्षात्कार यह अंतिम ध्येय माना गया है। मस्लॉ का सिद्धांत ध्यान में लें तो भक्ति करना यह हमारी जरूरत बनती है। अपने गुणों का उपयोग करने का अवसर मिले, यह हर मनुष्य की प्रबल इच्छा होती है। गुणों के उपयोजन का यदि अवसर नहीं मिला तो मनुष्य दुखी होता है। भक्ति में गुणों के उपयोजन का पूरा अवसर मिलता है। इस कारण भी मनुष्य मानसिक रूप से सुखी होता है।

भक्त के लिए मनुष्य जन्म का प्रयोजन क्या है? इसका विचार करना आवश्यक है। इस विषय में श्री गुरु तेगबहादुर जी कहते हैं :

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु॥
(पृ. 1426) यदि प्रभु के गुण नहीं गाये अर्थात् भक्ति नहीं की, तो मनुष्य जन्म व्यर्थ होगा। श्री गुरु नानकदेव जी ने भी ऐसा ही कहा है :

सुणि मन मितर पिआरिआ मिलु वेला है एह।
जब लगु जोबनि सासु है तब लागु इहु तनु देह।
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह॥१॥

(पृ. 20 श्री राग)

मेरे प्रिय मित्र ! मेरी बात सुन ले। प्रभु को मिलने का यही समय है। (प्रभु मिलन मानव शरीर में ही संभव है) जब तक यौवन और प्राण मौजूद है, तब तक यह शरीर प्रभु को अर्पित करना। (बुढ़ापा आने पर भक्ति करना शायद संभव नहीं होगा) गुणरहित शरीर कुछ काम का नहीं होगा, यों ही बरबाद होकर मिट्टी में मिल जाएगा। श्री गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा है :-

लख चउरासीह जोनि सबाई। माण कउ प्रभि दीई वडिआई।
इसु पउड़ी ते जो नर चूकै सों आइ जाइ दुखु पाइदा॥

(मारू सोहले म. 5 पृ. 1275-76)

सब जीव चौरासी लाख योनियों में बंटे हुए हैं। परमात्मा ने मनुष्य योनि को (मुक्ति लाभ का) सम्मान दिया है। मनुष्य जन्म प्राप्त होने पर भी जो भक्ति नहीं करता, वह सदा जन्म-मरण के चक्र में दुख भोगता है।

गुरुजनों के इन विचारों से केनोपनिषद के निम्न मंत्र का स्मरण होता है :

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।

मनुष्य को शरीर में ही, परमात्मा को जानना चाहिए। यदि वह जान न पाया तो महाविनाश है। महाविनाश का अर्थ जन्म-मृत्यु के चक्र में फंसना है।

जन्म-मृत्यु के चक्र से छूटने की जिसे चाहत है, उसे भक्ति करने के सिवाय अन्य कोई पर्याय उपलब्ध नहीं है। परमात्मा को जानने के लिए मनुष्य जन्म मिला है, इसीलिए भक्ति करना हमारा परम कर्तव्य है।

श्री गुरु अर्जुनदेव जी ने यही विचार अलग ढंग से निम्न शब्दों में व्यक्त किया है :

आत्म रसु जिह जानिआ हरि रंग सहजे माणु। नानक धनि धनि जन आए ते परवाणु॥ (बावन अखरी म-5 पृ. 252) जिन्होंने भक्तिरूपी आत्मरस को जाना है, वे स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के प्रेम का आनंद भोगते हैं। ऐसे व्यक्ति धन्य हैं। उनका मनुष्य जन्म सफल है।क्र....

भक्त रविदास (रैदास) - डॉ. अवतार शास्त्री

भक्त रविदास जी का जन्म 1376 ईस्वी में 'माण्डूर ग्राम' काशी में पिता रघू (राघव) और माता करमा देवी के यहां रविवार वाले दिन हुआ था। आप चमार जाति के होने के कारण आजीवन भर जूते बनाने का वंशानुगत पेशा करते रहे। अपने हलाल की कमाई के द्वारा अपना जीवन व्यतीत किया। आप द्वारा भेंट की गई दो दमड़ी गंगाजी ने स्वयं अपने हाथों से स्वीकार की। निश्चय ही आपकी आमदनी बहुत कम थी और आपकी बिरादरी के तथा अन्य लोग आपकी गरीबी की हंसी उड़ाते थे, फिर भी आप अपनी उदारता तथा प्रेम भक्ति के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए और निर्भयता पूर्वक अभिमानी पंडितों के समक्ष भगवद्-भक्ति के बल से यश प्राप्त किया। अपनी निर्धनता के बावजूद भी आप संतों-महापुरुषों और गरीबों की सेवा में सदा तत्पर रहते थे। लगता है कि भक्त कबीरदास जी की भांति आपको भी विद्यालय की विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी। आप अपनी बाणी में पुस्तकों के पठन प्राप्त होने वाले कोरे बौद्धिक ज्ञान को तुच्छ बताते हुए गुरु के निर्देशन में प्राप्त होने वाले उस आन्तरिक आध्यात्मिक ज्ञान को महत्व देते हें जिससे परमात्मा का सच्चा साक्षात्कार होता हैं आपने परमात्मा का साकार रूप माना है। आपकी दृष्टि में हरि-नाम ही पारस, कामधेनु और चिन्तामणि है। आप स्वामी रामानन्द जी के शिष्य थे और भक्त कबीरदास जी के समकालीन थे। चित्तौड़ की रानी झाली बाई की आप पर अपूर्व श्रद्धा थी।

ꕥ स्तुति भक्त रविदास जी ꕥ

रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाई॥
पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पाए पगि आई॥

(गुरु रामदास साहिब-रागु सूही पृष्ठ 733)

कबीर धिआइओ एक रंग॥ नामदेव हरि जीउ बसहि संगि॥ रविदास धिआए प्रभ अनूप॥ गुर नानकदेव गोबिंद रूप॥ (गुरु अर्जुनदेव-रागु बसंत पृष्ठ 1192)

साध संगि नाम बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो॥
नामदेव त्रिलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चमिआरो॥

(गुरु अर्जुनदेव-रागु गुजरी पृष्ठ 498)

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस॥
ते नर दोजक जाहिगे सति बाखै रविदास॥

(सलोक भक्त कबीर जी 242 पृष्ठ 1377)

रविदासु ढुवंता डोर नीति तिनि तिआगी माइआ॥
परगटु होआ साध संगि हरि दरसनु पाइआ॥

(भक्त धना जी-रागु आसा पृष्ठ 487)

भगत **भगत जगि वजिआ, चहुं चकां दे विचि चमरेटा॥ पाणां गढै राह विच, कुला धरम ढोइ ढोर समेटा॥ जिंउ करि मैले चीथड़े हीरा लाल अमोलु पलेटा॥ चहुं वरनां उपदेसदा, गिआन धिआनु करि भगति सहेटा॥ नावण आइआ संग मिल बानारस कर गंगा थेटा॥ कतु कसीरा संडपिआ रविदासै गंगा दी भेटा॥ लगा पुरब अभीच दा डिठा चलित अचरज अमेटा॥ लइआ कसीरा हथ कढ सूत इक जिंउ ताणा पेटा॥ भगत जनां हरि मां पिउ बेटा॥१७॥**

(भाई गुरदास जी, वार 10 पउड़ी 17)

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की (1106)

ऐसी **लाल तुझ बिनु कउनु करै॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्र धरै॥१॥ रहाउ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंद काहू ते न डरै॥१॥ नामदेव कबीर तिरलोचनु सधना सैनु तरै॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै॥२॥**

हे प्यार! तेरे बिना कौन कर सकता है? मेरा प्रभु गरीबों पर कृपा करने वाला है और 'उसी' ने मेरे माथे पर विजय वैभव सूचक छत्र रख दिया॥1॥ रहाउ॥ संसार को जिसकी छूत लगती है, उस अछूत जन पर केवल तुम ही अनुग्रह कर सकते हो। मेरा प्रभु नीच को भी उच्च करने वाला है। उसे किसी का भय नहीं है। नामदेव (छीपा), कबीर (जुलाहा), त्रिलोचन (बणिआ), सधना (कसाई), और सैन (नाई)-ये सभी उसी की कृपा से तर गये। भक्त रविदास जी कहते हैं कि हे संतों! सुनो, हरि से सब कुछ बन आता है अर्थात् मेरा प्रभु सभी कार्यों को पूर्ण करने में समर्थ है।॥2॥

रागु सूही बाणी स्त्री रविदास जीउ की (794)

ऊचे **मंदर साल रसोई॥ एक घरी फुनि रहनु न होई॥१॥ इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी॥ जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी॥१॥रहाउ॥ भाई बंध कुटंब सहेरा॥ ओइ भी लागै काढु सवेरा॥२॥ घर की नारि उरहि तन लागी॥ उह तउ भूतु भूतु करि भागी॥३॥ कहि रविदास सभै जगु लूटिआ॥ हम तउ एक राम कहि छुटिआ॥४॥**

भले ही हमारा महल ऊँचा हो और रसोईघर भी आलीशान हो, पर मौत हमें इनमें एक पल भी अधिक टिकने नहीं देती।।1।। यह शरीर घास की टट्टी जैसा है और घास जैसा ही यह जलकर मिट्टी में मिल जाता है।।1।। रहाउ।। भाई बंधु तथा सगे संबंधी शरीर के अन्त में होते ही इसे जल्दी से जल्दी बाहर निकालने में लग जाते हैं।।2।। यहां तक की अपनी स्त्री जो इस शरीर को छाती से लगाये रखती थी, वह भी इस मुर्दे शरीर को देख 'भूत-भूत' कहकर भागती है।।3।। भक्त रविदास जी कहते हैं कि काल ने इस सारे संसार को लूटा है, पर मैं एक राम का स्मरण करके इस काल के चंगुल से छूट गया है।।4।।

राग पूरबी रविदास जीउ (346)

कूपु **भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ॥ ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ॥१॥ सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी॥१॥रहाउ॥ मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ॥ करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ॥२॥ जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार॥ प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार॥३॥**

जिस तरह कुएँ में पड़े हुए मेढ़क को कुएँ के अतिरिक्त किसी देश-विदेश (बाहरी दुनियाँ) का ज्ञान नहीं होता, उसी तरह विषय-वासनाओं के मोह में पड़े मेरे मन को न इस लोक की सूझ है और न किसी दूसरे ही लोक की।।1।। हे समस्त विश्व के मालिक ! ऐसी स्थिति में पड़े हुए मुझको तुम किसी तरह एक क्षण के लिए दर्शन दिखा दो।।1।। रहाउ।। हे माधव प्रभु ! मेरी बुद्धि मलिन हो गई है। तुम्हारी गति मैं समझ नहीं सकता। तुम ऐसी कृपा करो कि मेरे भीतर से भ्रम दूर हो जाये। मुझे सद्‌बुद्धि दो जिससे मुझे समझ आ जाये।।2।। चमार जाति में उत्पन्न भक्त रविदास जी कहते हैं कि हे अपार प्रभु ! योगेश्वर भी तुम्हें नहीं पा सकते। तुम्हारे गुणों का वर्णन करना असंभव है। केवल प्रेम और भक्ति के कारण मैं तुम्हारा गुणगान करता हूँ।।3।।

गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ (345-46)

घट **अवघट डूगर घणा इकु निरगुण बैलु हमार॥ रमईऐ सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि॥१॥ को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे॥१॥रहाउ॥ हंउ बनजारो राम को सहज करउ व्यापारु॥ मै राम नाम घनु लादिआ बिखु लादी संसारि॥२॥ उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु॥ मोहि जम डंडु न लगाई तजीले सरब जंजाल॥३॥ जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु॥ मेरे रमईऐ रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार॥४॥**

परमात्मा से मिलने की राह बड़ी ही ऊँची-नीची और कठिनाइयों से युक्त है और मेरा जीवन रूपी बैल जिस पर राम का सौदा लाद कर ले जाना है बिलकुल ही गुणहीन है। परमात्मा से मेरी यही एक बिनती है कि हे मुरारी ! मेरी पूंजी किसी तरह बचा लो।।1।। क्या कोई राम का व्यापारी है जो मेरे साथ चल सके? मेरे व्यापार का माल लादा जा रहा है।।1।।रहाउ।। मैं राम का व्यापारी हूँ और सहज अवस्था का सौदा करता हूं। मैं राम-नाम का धन लादता हूं, जब कि दुनिया के लोग विषय-वासना (विष) का सौदा लाते हैं।।1।। हे इह लोक और परलोक का लेखा लेने वाले ! तुम यहां 'वहां' जहां जो भी लेखा लिखना हो, लिख लो, पर मुझे यमराज (जो प्राणियों के मरने के बाद उनके कर्मों का हिसाब करता है) का दण्ड नहीं लग सकता क्योंकि मैं सांसारिक कर्मों के सारे झमेलों से मुक्त हो चुका हूं।।3।। इसलिए भक्त रविदास जी कहते हैं कि चाहे संसार का रंग कुसम्भी के रंग जैसा लाल है पर वह जल्दी ही फीका पड़ जाता है, परन्तु मेरे रमैया प्रभु का रंग मजीठ है जो कभी फीका नही पड़ता।4।।●

संत रविदास और सामाजिक समरसता - सोप्रकाश, रि. आई.ए.एस.

संत रविदास अपने नाम को सार्थक करते हुए तेजस्तत्त्व विराट् के मुख 'अग्नि' को अपनी वाणी, चिंतन और आचरण से चरितार्थ करते हैं। अग्नि तत्त्व जल से उत्पन्न होने से अग्नि केवल ज्वलनशील ही नहीं, प्रकाश, ज्योति, ज्ञान एवं ऊर्जा रूपों में धरती पर विद्यमान अस्तित्व की पोषक भी है। संत रविदास में यह अग्नि परमात्म को एक विशिष्ट व दुर्लभ आयाम में ढालत हुई अप्रमेय की सिद्धि करती है। तभी यह कथन यहाँ सिद्ध होता है कि परमात्मा सबमें है, सब कहीं है, परन्तु संत महात्मा दुर्लभ है। अत: दुर्लभों में दुर्लभ संत रविदास समूची मानवता एवं अस्तित्व के अधिष्ठान हैं। विश्वधर्मों के सारात्त्व रूप में उनकी एक ही साखी प्रमाण बन जाती है-

मन चंगा तो कठौती में गंगा।

मन के स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शी और पावन होने का माहात्म्य मनुष्य और मनुष्यता के उत्कर्ष का द्योतक है। भारतीय जनमानस लोक और लोकशक्ति को परमात्मा से ऊँचा और बढ़कर मानता है। तभी मंदिर में स्थापित परमात्मा, भगवान् राम, कृष्ण आदि की नई मूर्ति में 'प्राण-प्रतिष्ठा' का विधान अनिवार्य है, जिसमें गांव, देहात, प्रदेश का लोक एकत्रित होकर मूर्ति को स्पर्श देता, अपने मन मंदिर में, हृदय में धारण करके अपने-अपने घर ले जाता है। लोक के चैतन्य-स्पर्श से मूर्ति में प्राणों की प्रतिष्ठापना का विधान धरती पर मनुष्य में अध्यात्म चेतना के सत्य का सर्वोच्च सम्मान और प्रमाण है। अत: भारतीयों का भगवान् लोक और लोकमानस का मुखापेक्षी है। इस तथ्य को कबीर यों कहते हैं-

कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।
पाछे पाछे हरि फिरे, कहत कबीर कबीर॥

भारतीयों का भगवान् भक्तों के पीछे-पीछे डोलता है, अनुचरवत्। इतना ही नहीं, संत मलूक उसी राम को भक्त के नाम का 'सुमिरन' करते हुए पाते हैं-

माला जपौं न कर जपौं, जीभ्या कहौं न राम।
सुमिरन मेरा हरि करै, मै पायो विश्राम॥

और संत रविदास जी कहते है-

जिह्वा से ओंकार भज, हत्थन सौं कर कार।
राम मिलहि घर आइकर, कहि रविदास विचार॥

संत अनंतहिं अंतर नाहिं।

भक्ति और कविता का क्षेत्र भावों का क्षेत्र हैं, जहाँ भाव पक्ष और आगे विकसित होकर आत्मविश्वास में खुलता है। यहीं रस, रसिकता, समरसता होती है। समरसता का अर्थ हृदयगत भावों का सहमिलन है, सहवीर्य होना है। संत रविदास हृदयगत भावों की इस तरंग पर सवार हो गए थे, राजा ने भी तब उनकी पालकी अपनें कंधों पर धारण की, क्योंकि सच्चा राजा अपनी प्रजा की आत्मा की उपज होता है। अत: समरस समाज का मुखिया राजा भी ऐसे संत को कंधों पर ही नहीं, सिर पर भी धारण करके स्वयं को धन्य मानेगा।

महापुरुषों में देवत्व के गुण कहाँ से आते हैं? किस तरह से और किस भाँति आते हैं? माखनलाल चतुर्वेदी जी के शब्दों में-''ठीक उसी तरह जिस तरह फूल अपनी सुगंध का आधा हिस्सा साथ में अठखेलियां करने वाली वायु से पाते हैं और आधा हिस्सा उस जमीन से जिसमें वे उगे हैं और रस खींच रहे हैं, महापुरुष अपना आधा देवत्व देश की कठोर और कठिन परिस्थितियों में से और आधा अपने हृदय की उच्च शक्ति से प्राप्त करते हैं।'' संत रविदास भी ऐसे ही महापुरुष, महामानव एवं महान् संत थे, जो अपने समय-समाज की विकट विसंगतियों से, विडंबनाओं से संबद्ध थे तथा स्वयं उनका शिकार भी थे। दूसरी ओर, इस विष को पीकर, पचाकर मानव समाज के कल्याणार्थ हृदयस्थ ऊँचे, कल्याणकारी भावों की गांव को अवतरित करा लाए। संत रैदास बड़े साहसी एवं वीर योद्धा थे, जो समाज के उत्पीड़ित, उपेक्षित, मूक, निर्बल लोगों के पक्ष में बोले, ताकि अपने ही समाज के वृहत् अंग को निर्बलता से उबारकर पुन: शक्तिशाली बनाया जा सके। रैदास समूचे समाज के मुखिया, जाग्रत पुरुष की भाँति हितैषी-चिंतक के कर्तव्य-आसन पर स्थित थे। वह चिंतन-मनन, उद्बोधन द्वारा मानवीय गौरव, गरिमा और आत्म-रस से समाज में जागृति, समानता और बंधुत्व के भाव जगाकर

स्वस्थ-सबल उन्नत समाज की रचना करना चाहते थे। संतों का सबसे अधिक बल आचरण पर रहा है। कागद की लेखी से अधिक आँखिन देखी (कबीर) पर रहा है। कर्म को संतों ने इसी कारण अधिक महत्व दिया है, क्योंकि कागद की लेखी का, वेद-उपनिषद् का हवाला देकर अपने हर प्रकार के ओछे अमानवीय कामों को भी छुपा-ढक लेना और तथाकथित निम्न जाति में उत्पन्न के श्रेष्ठ-मानवीय कार्यों को नीचा बताना अन्याय है। जन्म को ऊँच-नीच का आधार नहीं मानना चाहिए। कर्म ही ऊँच-नीच का आधार होता है। तभी संत रविदास का कथन है-

रविदास जन्म के कारनै, होत न कोउ नीच।
नर कूँ नीच करि डारि है, ओछे करम की कीच॥

कर्म और आचरण से मनुष्य की पहचान और मन-अपमान होना चाहिए। कर्म ही मनुष्य को ऊँचा और नीचा बनाता है, न कि जन्म और जाति। क्योंकि परमात्मा की रचना, दृष्टि और स्नेह सबके लिए एक समान है। फिर यदि मानव समाज ने ऊंच-नीच के भेदभाव बना ही लिये हैं, तो भी गोविंद बिना किसी भेदभाव और भय के नीचा कहे जानवालों को भी उनके अच्छे-मानवी कर्म देखकर उन्हें ऊंचा उठा देता है, जैसे नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, साधना और सैन को-

जाकी छोति जगत कउ लागै, तापर तुहीं ढरै।
नीचहुँ ऊँच करै मेरा गोबिंदु, काहूँ तैं न डरै॥

नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, साधना, सैनु तरै।
कहि रविदास सुनहु रे संतो, हरि जीउ तैं सभै सरै॥

नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना तथा सैन, जिन्हें समाज निम्नकुलोत्पन्न मानकर अछूत मानता था, वे अपने श्रेष्ठ मानवी गुणों के कारण समाज में ऊंचे और सम्मानित माने गए। (ये सभी रविदास चमार, नामदेव छीपी, कबीर जुलाहा, त्रिलोचन वैश्य, सधना कसाई, सैन नाई कुल में उत्पन्न थे।) परमात्मा की करुणा इन पर बरसी, कृपा हुई। ये सब ऊंचे-श्रेष्ठ माने गए। अत: जन्म की अपेक्षा व्यक्ति के कर्म ही कसौटी हैं। अन्यथा सभी एक ही परमात्मा के आत्म अंश है। समान हैं। संत दादू भी इस तथ्य को अपनी वाणी में कहते हैं-

दादू पूरण ब्रह्म विचाररिए, तब सकल आत्मा एक।
काया के गुण देखिए, तौ बांना वरण अनेक॥

संत रैदास का कथन है-

रविदास उपजइ सभ इक नू तें, ब्राह्मण मुल्ला सेख।
सभी को करता एक है, सभ कू एक ही पेख॥

सामाजिक समरसता वास्तव में समाज के सभी घटकों-वर्गों का आत्मीय सामंजस्य है। अपनी वाणी में प्रभु के साथ भक्त के संबंध को वह अद्वैत वेदांत की चेतना द्वारा व्यक्त करते हैं-

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।
जाकी अंग अंग बास समानी॥

पानी में घिसने पर चंदन अपने रूप, रंग, गंध से पानी के सर्वांश में समा जाता है, एकरस हो जाता है, एक रंग और एक आत्म हो जाता है, तब जल की तरलता और चंदन की गंध-रंगत भी दृष्टिगोचर होती है। इसी भांति संसार की भौतिक विविधता, जातीय रंग-रूपगत भिन्नताओं के रहते भी समाज समरस बन सकता है। यह कोई असंभव स्थिति नहीं है। हाँ, समरस होने में जल और चंदन की भांति परस्पर एक होने, मिलने, भेंटने की इच्छा-आकांक्षा को दोनों और उदग्र होना जरूरी है और यह समरसता घटित भी होती है हृदयगत भाव के तल पर। देहों के मिलने से पहले मनों का मिलना, हृदयों का मिलना आवश्यक है। और भावों के मिलने के साथ ही विचारों का मिलन भी जरूरी होता है। भाव हमारे अंत:करण को साधता है तो विचार बाहरी जीवन-परिवेश, भौतिक पर्यावरण को। सभी सामाजिक घटकों का ऐसा मिलन कि जैसे एक ही देह दो हाथ, पैर, कान और आंख हों। संत दादूदयाल ने अपनी एक साखी में इसी बात को कहा है -

दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान।
दोनों भाई नैन हैं, हिंदू-मुसलमान॥

किंतु यहाँ दादूजी ने एक बात भक्तों-सामाजिकों, हिंदू-मुसलमान के सोचने-समझने के लिए छोड़ दी है कि एक ही शरीर के उक्त दोनों अंग तभी एकरस, परस्पर सहयोगी और हितैषी हो सकेंगे, जब उनको एकता की अनुभूति कराने वाली उनकी आत्मा जगी होगी। तभी वे एक-दूसरे की पीड़ा को अनुभव कर पाएँगे, वेदना से जुड़

पाएँगे। विचार और बुद्धि से भी उन्हें परस्पर जुड़ना, एक होना पड़ेगा। समरसता भाव और विचार के जाग्रत्-सचेत होने पर घटित होता है।

भारतीय संस्कृति वस्तुतः मानवीय संस्कृति है, क्योंकि उसके आधारमूल्य सार्वभौम है। भावना के तल पर हृदयगत भावों को आगे रखकर व्यवहार-कर्म करने वाली विचारधारा 'वसुधैव कुटुम्बकम' को अंगीकार करके चलती है। उसके लिए मनुष्यता का सत्य ही सर्वोपरि हैं।

ब्रह्म को रविदास सर्वव्यापक तो मानते ही हैं, साथ ही ऊपर कहे अनुसार आरती के रूपक में विराट् पुरुष के रूप में इस पंक्तियों में वर्णन है कि ब्रह्म के चरण पाताल में और शीश आकाश में है-

चरण पताल शीश असमाना। सो ठाकुर कस संपुट समाना।।
शिव सनकादि अंत न पाया। ब्रह्मा खोजत जनम गंवाया।।

आज यदि विश्व के परिदृश्य पर ऐशिया के जागरण की संकल्पनाएं अंगड़ाइयां ले रही हैं, तो भारतीय महाद्वीप देशों की दबी, कुचली, दलित जातियाँ भी जाग रही हैं। वे भी अपनी अधिकार-चेतना के प्रति सजग होकर आगे बढ़ना चाहती हैं। ऐसे में भारतीय लोकतंत्र तथा इसका संविधान स्वतंत्रता-परवर्ती काल में युगों की अन्याय-श्रंखला को तोड़ने और अस्मिता के संघर्ष में जूझ रहे दलितों को हर क्षेत्र में आगे आने के अवसर प्रदान कर रहे हैं। अतः समाज की मनोभूमि को इन संवैधानिक मूल्यों से सींचने वाले संतों में संत रैदास सबसे आगे हैं। संत कबीर ने बड़े भाव से यों ही नहीं कहा 'संतों में संत रैदास' और 'भक्तमाल' में नाभादास ने इनकी बाणी की सराहना करते हुए लिखा-''**संदेह ग्रंथि खंडन निपुन बानी बिमल रैदास की**''। अर्थात् संदेहों का खंडन करने में समर्थ है संत रविदास जी की बाणी और वह बाणी अति विमल है, निर्मल है। यहीं यह भी ध्यान देने योग्य है कि रविदास 'बेगमपुरा शहर का नाऊँ' के रूपक को एक आदर्श समरस समाज के रूप में बसा देखना चाहते हैं, जहां किसी को भी किसी प्रकार का गम नहीं हो। ●

संगत संसार (मासिक पत्रिका) पाठकों के लिए विशेष ध्यानार्थ

गुरबाणी का 100% हिन्दुस्थानियों तक प्रकाश पहुंचाने के संकल्प से प्रेरित 'संगत संसार' मासिक पत्रिका को संतों-विद्वानों-प्रचारकों-आम जागरूक जन एवं गुरसिखों का आशीर्वाद प्राप्त है। गत वर्ष 300 साला गुरता गद्दी वर्ष में संगठन की महान गतिविधियों, भोपाल सांझीवालता प्रशिक्षण वर्ग की अभूतपूर्व सफलताओं में प्रयत्नरत रहने के कारण अपने में से हजारों पाठकों की **वार्षिक माया सेवा** (रुपये 100/- मात्र) कब समाप्त हो गयी, पता ही नहीं चल सका। अतः आओ, इस कमी को जानने के बाद हम अपनी वार्षिक **माया सेवा** भेजकर 'संगत संसार' की आर्थिकता को दृढ़ता प्रदान करें। पाठक बंधु इस प्रकार से योगदान कर सकते हैं-

1. आपकी पत्रिका एक महीने से अथवा अधिक समय से सदस्यता के नवीनीकरण न होने के कारण प्राप्त नहीं हो रही हैं, तो अतिशीघ्र मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट से अपने डाक व पते सहित रकम भेजें।
2. यदि अगर आपके पास निःशुल्क (Complimentary) प्रति लगातार पहुंच रही हैं, तो क्या आप नियमित सदस्य बनने की सोचेंगे? इसके लिए अपनी **वार्षिक माया सेवा** (रुपये 100/- मात्र) भिजवाने की कृपा करेंगे।
3. आप अत्यन्त व्यस्त हैं। फिर भी, क्या 'संगत संसार' मासिक पत्रिका के अपने आस-पास के सम्पर्क में कम से कम 25 सदस्य बनवाकर, धन संग्रह करके, नाम व पता लिखकर, ड्राफ्ट भिजवाकर गुरवाणी प्रसार में हमारे सहयोगी बन सकते हैं?
4. क्या हम आजीवन सदस्य रुपये 2000/- देकर बन सकते हैं?

बिहारी लाल
राष्ट्रीय सदस्यता प्रमुख

अविनाश जायसवाल
राष्ट्रीय महामंत्री संगठन

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की 343 वीं जयंती पर नागपुर में निकली भव्य शोभायात्रा

- अधि. माधवदास ममतानी

नागपुर। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज की 343 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में जरीपटका स्थित श्री कलगीधर सत्संगत मण्डल द्वारा विगत सात दिनों से जारी विशाल धार्मिक अनुष्ठान बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इन सात दिनों में नागपुर के अलावा विदर्भ, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, राजस्थान इत्यादि राज्यों से लाखों श्रद्धालुओं ने श्रद्धापूर्वक शामिल होकर जरीपटका को अबिचलनगर (नांदेड़) जैसा स्वरूप दे दिया। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी का जन्म सन् 1723 पोह माह की सप्तमी के दिन पटना शहर में हुआ जिसकी समकक्ष अंग्रेजी तारीख इस वर्ष 24 दिसम्बर 2009 थी।

दोपहर 12.30 बजे अतिथियों व श्रद्धालुओं द्वारा पूजा-अर्चना व आदि गुरु श्री गुरुग्रंथ साहिब की बीड़ को अरदास कर शोभायात्रा आरंभ करने की अनुमति ली गई। शोभायात्रा मंडल हाल से विभिन्न जयघोषों, गुरुबाणी गायन व अनेक नयनाभिराम झांकियों सहित हर्षोल्लास-धार्मिक वातावरण में निकलकर पुनः मंडल के हाल में शाम 5.00 बजे पहुंची। शोभायात्रा का मार्ग पानी से साफ कर आकर्षक पुष्प बिछाकर, तोरण द्वार सजाए गये थे। जहां-जहां से शोभायात्रा गुजर रही थी वहां के नागरिक व विभिन्न धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक संस्थाओं ने अति उमंग-उत्साह के साथ स्वागत किया व शोभायात्रा की प्रमुख विशेषता यह थी कि शामिल हजारों की संख्या में श्रद्धालु नर-नारी, बच्चे व वृद्ध अनुशासन में एक ही लय-सुर-ताल में कर्णप्रिय गुरुबाणी गायन कर संपूर्ण परिसर को धार्मिक मय बनाते हुए आगे बढ़े जा रहे थे। वस्तुतः यह दृश्य अविस्मरणीय व दर्शनीय था तथा भक्ति भावना की जीती जागती मिसाल पेश कर रहा था।

अधि. ममतानी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को आह्वान किया कि श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी द्वारा दिए हुए उपदेश-जाति भेद मिटाना, अत्याचार व अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना, सभी धर्म के अवतारों का आदर व सम्मान, देश के हित में सर्वस्व कुर्बानी, जरुरत मंद दीन हीन दुखियों की सहायता इत्यादि को आत्मसात करना चाहिये ताकि देश में स्वस्थ समाज का निर्माण हो। अतः में अधि. ममतानी ने आदि श्री गुरुग्रंथ साहिब के समक्ष सभी की शुभ मनोकामनाएं पूर्ण हो तथा हिंदु-सिख-मुस्लिम में एकता हेतु अरदास की। संयोजक अधि. ममतानी ने जयंती के सभी कार्यक्रमों के अति सुंदर आयोजन में सहयोग के लिये हजारों श्रद्धालुओ, रागियों, सेवाध ारियों द्वारा दिये गये सहयोग के लिये आभार प्रकट किया व श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जयंती के उपलक्ष्य में सभी को बधाईंयां दी। मंडल द्वारा जयंती मनाने का यह 40वां वर्ष था।

कार्यक्रम में, मत्सय्-दुग्ध व पशुपालन मंत्री विधायक डॉ. नितिन राऊत, अन्न-खाद्य केबिनेंट मंत्री श्री अनिल देशमुख, पूर्व सांसद श्री बनवारीलाल पुरोहित, महापौर श्रीमती अर्चना डेहनकर, कांग्रेस अध्यक्ष जयप्रकाश गुप्ता, विधायक विकास कुम्भारे, नगर सेवक द्वय श्री वेद आर्य व प्रकाश तोतवानी, पूर्वमंत्री व औरंगाबाद के आमदार एड. प्रीतमकुमार शेगांवकर, म.न.पा. रि.पा.ई. पक्ष नेता प्रकाश गजभिए, ए.सी.पी. श्री अनिल बोबड़े, पूर्व विधायक श्री भोला बढ़ेल, इत्यादि गणमान्य प्रतिष्ठित नागरिकों ने गुरु महाराज के चरणों में अपनी हाजरी दर्ज करा गुरु महाराज का आशीर्वाद लिया।●

जापु साहिब का समग्र भाव

- डॉ. अर्जुन अविनाशी

''जाप साहिब'' भाई मनीसिंह द्वारा संपादित गुरु गोबिन्द सिंह के दशम् ग्रंथ संग्रह की प्रथम रचना है। गुरु जी के धार्मिक संस्कार प्रबल थे और उन्होंने धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया है। संभवत: इसीलिए ईश्वर नाम के स्मरण, स्तुति और वन्दना से संबंधित यह रचना सर्वप्रथम संकलित हुई। यह गुरसिखों के नित्य पाठ में सम्मिलित है।

इस कृति के आरम्भ में प्रथम छंद में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

चक्र चिह्न अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह्।
रूप रंग अरु भेख कोऊ कहि न सकति किह॥
अचल मूरति अनुभव प्रकास अमितोज कहिज्जै।
कोटि इंद्र इंदाणि साहि साहाणि गणिज्जै॥
त्रिभवन महीप सुर नर असुर नेति नेति बन त्रिण कहत।
तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति॥

तदन्तर गुरु साहिब ने ब्रह्म के निराकार रूप को विभिन्न विशेषणों से संबोधित करते हुए उसको नमस्कार किया है। उसके अदृश्य, अनादि, अपरम्पार, निर्विकार आदि रूपों की बार-बार वन्दना की है। उसे अशरीरी, अयोनि (अजन्मा), अनाम व स्थानरहित बताया है। वही मुसलमानों का रहीम, करीम और अल्लाह है।

''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति''

वह एक अद्वैत व्यक्ताव्यक्त अनन्त अविनाशी स्वानुभूतिगम्य है, उसे विद्वानों और तत्त्वेत्ताओं ने अनेकों नामों से पुकारा है।

तत्पश्चात् इस ग्रंथ में ईश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन है। वह जल, थल, वायु, पाताल अंतरिक्ष आदि में सर्वत्र विद्यमान है। वही समस्त जगत का स्रष्टा, अकाल पुरुष है। उसका न कोई पिता है, न माता है, न कोई पुत्र है, न पौत्र है, न कोई शत्रु है, न मित्र है और न ही कोई जाति-पाति है। वही जिमीनुल जमां (सर्वव्यापक), करीमूल कमाल (परम दयालु) और अमीकल इमां (असीम धर्म) है। वही अंधकार, प्रकाश, जीव, प्रकृति आदि सबका कारण है। कृति के अन्त में पुन: उस बुरे समय को नष्ट करने वाले, दयालु स्वरूप, सदा अंग-संग रहने वाले अनश्वर सम्पत्ति के प्रदाता, सच्चिदानंद परमेश्वर को नमस्कार किया गया है-

दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे।
सदा अंग संगे अभंगं बिभूते॥199॥

अपने नाम को सार्थक करती हुई यह रचना वास्तव में जपनीय है। जप का अर्थ है किसी मंत्र अथवा वाक्य का निरन्तर, धीरे-धीरे पाठ और सिमरन करना। इस धार्मिक पुस्तक में भक्त गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा अनेक विधियों से इष्ट का जप किया गया है। जप के लिए इष्ट के कर्मों, उसके प्रभावों एवं विधि रूपों के बखान की आवश्यकता नहीं होती। कभी-कभी तो एक शब्द मात्र से साधक इष्ट को बार बार पुकारता हुआ चिन्तन कर अपना ध्यान प्रगाढ़ व केन्द्रित कर लेता है।

जप का मूल उद्देश्य आत्मविस्मृति है। अतएव 'जापु' में छोटे छन्दों का बाहुल्य है। दीर्घछंद विभिन्न अलंकार, विशद वर्णन आत्म-विस्मृति में बाधक सिद्ध हो सकते हैं। 'जापु' में कुल 199 छंद है। प्रत्येक छंद स्वतंत्र और अपने आप में पूर्ण है। इसमें छप्पय (छपै), भुजंग प्रयात, चाचरी, चरपट, रूआल, मधुभार, भगवती, रसावल हरिबोलमाना, एक अछरी इत्यादि दस प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है। इनमें से भुजंगप्रयात और चाचरी छंद का आधिक्य है। ग्रंथ की भाषा 'ब्रज' है। इसमें अवधि भाषा का पुट भी मिलता है। अनेक छंद फारसी शब्दावली से भरपूर हैं-

कि रोज़ी रज़ाकै। रहीमै रिहाकै॥
कि पाक बिऐब हैं। कि ग़ैबुल ग़ैब हैं॥108॥
कि हुसनल वजू है। तमामुल रुजु हैं।
हमेसुल सलामै। सलीखत मुदामै॥121॥
गनीमुल शिकसतै। गरीबुल परसतै॥
बिलंदुल मकानैं। ज़िमीनुल जमानैं॥122॥

यत्र-तत्र और फारसी शब्दों का प्रयोग ईश्वर के गुणों के अनुसार स्वभाविक ढंग से किया गया है-

कि राज़क रहीम है। कि करमं करीम हैं।
कि सरबं कली हैं। कि सरब दली हैं।110॥

कुछ एक छन्दों में फारसी शब्दों के साथ संस्कृत प्रत्यय (छन्द 110 में फारसी शब्द ''करम'' के लिए ''करम'' का प्रयोग) तथा संस्कृत शब्दों के साथ फारसी प्रत्यय (छन्द 124 में 'अनेक' का 'अनेकुल' रूप और छन्द 127 में 'सदैव' का 'सदैवल' रूप) का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं फारसी संज्ञाओं के साथ संस्कृत विशेषण प्रयुक्त हुए हैं-

कि सरबं कलीमै। कि परमं फहीमै।
कि आकल अलामै। कि साहिब कलामै॥१२०॥

यहां फारसी शब्द 'कलीम' (शक्ति सम्पन्न), 'फहीम' बुद्धिमान के साथ क्रमश: सरबं सर्व तथा परमं (परम) विशेषणों का प्रयोग हुआ है।

यह रचना संस्कृत रचना 'विष्णु सहस्त्रनाम' की शैली पर लिखी गयी है, जिसमें विष्णु के हजार नामों का वर्णन है।

जापु साहिब का हृदयंगम करने से, उस पर चिन्तन करने से तथा परम श्रद्धा से उनका जाप करने से जो कुछ उपलब्धि होती है, रूपान्तरण होता है, उसे तो केवल अनुभूति से जाना जा सकता है। गहरे अनुभवों और भाव-विभोरता को शब्दों में लाना कठिन है-

दिल का दरया नुक्त की वादी में बह सकता नहीं।
आदमी महसूस कर सकता है, बयां कर सकता नहीं॥

गुड़ के स्वाद को महसूस किया जा सकता है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। उसी प्रकार ईश्वर ध्यान स्वरूप है और उसकी अनुभूति नाम में डूबने की खुमारी से, समाधि की स्थिति में, ध्यान की चरम अवस्था में होती है-

फिर ध्यान जगा फिर वही आलम नजर आया,
एक जलवा-ए-अनवार मुज्जसम जनर आया।
तूने कैफियत-ए-नजारा जो अता की,
हर शह तेरे हुस्न का आलम नजर आया॥

फिर जो दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है, हर वस्तु में उस अकाल पुरुष का साक्षात्कार होता है। जापु साहिब का अन्तर्निहित विषय अनेकों में एक, विभिन्नताओं में एक अखण्ड अविनाशी का दिग्दर्शन कर उसके असंख्य नामों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का न तो शब्दों में वर्णन किया जा सकता है, न ही किसी पुस्तक आदि के पढ़ने से इसका साक्षात्कार हो सकता है।

वही शुद्ध चैतन्य (Pure Awareness) जागृत, स्वप्न व सुषुप्ति की तीनों चरम अवस्थाओं को प्रकाशित कर रहा है। अपनी उज्जवल ज्योति से अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष, हिरण्यमय कोष आदि को ज्योतित कर अपने चिन्मय रूप में स्थित है। भू भुव: स्व:-तीनों लोकों को अपनी विलक्षण ऊर्जा से सम्पदित कर रहा है। वह सत् है-अर्थात् सम्पूर्ण अस्तित्व में उसकी सत्ता में गति है। नित्य सनातन, चिरन्तन होने से सदा सत् है। चराचर में चैतन्य शक्ति, बोध होने से वह चित्त है और सब में आनन्द की प्यास आनन्द के लिए प्रयास और आनन्द की उपलब्धि होने से वह सत्‌चित आनन्द है। उसी में होना, उसी में जीना-जापु साहिब का मूल्य निर्देशन है।

एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक।
खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिरि एक॥81॥

सार प्रपंच उसी का है। सारी लीला उसी की है। सारा जगत उसका क्रीड़ा स्थल है, जहां वह सबको नचा रहा है। अपनी त्रिगुणात्मक प्रकृति द्वारा जीवधारियों को स्वभावानुसार यन्त्रवत घुमा रहा है। वह आप सुन्दर हस्ती है, परन्तु जगत में दो विरोधी स्वभाव दिखायी दे रहे हैं। वास्तव में यह उसी का जमाल दे जलाल (नूर) है। वह प्यार रूप भी स्वयं ही है और भयानक रूप भी।

जन्म, विकास और क्षय-विनाश सोपानों पर चढ़ता हुआ जीवन का चक्र चल रहा है। जगत रचना के समस्त तरीके परमात्मा के अपने हाथ में है। जगत के लिए उसे कोई विशेष कार्य नहीं करना पड़ता। ऐसे नियम और कानून बनाये गये है, जिनके बीच कोई रुकावट नहीं है और जिसका विरोध कोई जीव नहीं कर सकता। जगत की रचना कर परमात्मा न तो संसार या ब्राह्‌माण्ड की किसी वस्तु से पृथक है और न ही संसार की कोई वस्तु उससे विलग है। इसका सत्य और कर्ता रूप सदैव व सर्वत्र विद्यमान है, वही बोल रहा है। इसका एक उदाहरण है। वह प्यार ही प्यार है। जगत बनाता व बिगाड़ता रहता है, परन्तु वह स्वयं अजर अमर है। वही ब्रह्‌मा विष्णु महेश है।

वह अभंग, अखण्ड, एक रस अद्वैत अविनाशी-सब विभूतियों को प्रकाशित करता हुआ हमारे अन्दर बाहर है। उसकी कृपा के पात्र बनना, उसके नामों का जाप, भजन आदि करना-वास्तव में यहीं जापु साहिब का समग्र भाव है। यही जीवन की सफल यात्रा है।●

हरिद्वार में महाकुम्भ पर्व का महत्त्व

– **स. सुरिन्दर सिंह नामधारी**, बाजपुर

जब देवता और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था तब से भारतवर्ष में कुम्भ महापर्वों की परम्परा का शुभारम्भ हुआ।

विवादे काश्यपेयानां यत्रयत्रावनिस्थले।
कलशोन्यपतत्तत्र कुम्भः पर्वः तदोच्यते।।

अर्थात् समुद्र मंथन के फलस्वरूप अमृत कुम्भ की प्राप्ति के लिए जब महर्षि कश्यप के पुत्र देवता और असुरों में विवाद हुआ, उस समय वह अमृत का कलश पृथ्वी पर जिन योगों में, जिन स्थानों पर रखा गया, उन्हीं योगों में, उन स्थानों पर कुम्भ महापर्व होता हैं। उस विवाद में कुम्भ बारह स्थानों पर रखा गया है। परन्तु–

तत्राधनुत्तये नृणां चत्वारोहिभुवि भारते।
अष्टो लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चेतरैः।।

उनमें से मनुष्यों का उद्धार करने के लिए भारतवर्ष में चार स्थानों पर कुंभ रखा गया। आठ स्थान लोकान्तरों में देवताओं के लिए हैं। पृथ्वी में कुम्भ चार ही स्थानों पर रखा गया था। इसलिए भारत में चार ही स्थानों पर पर्व मनाए जाते हैं। इन स्थानों में से एक स्थान हरिद्वार है।

पद्मिनी नायके मेषे कुम्भराशि गते गुरौः।
गंगा द्वारे भवेद्योगःकुम्भ नामा तदोत्तमः।।

जिस वर्ष कुम्भ राशि में गुरु होते हैं उस वर्ष के मेष संक्रमण के समय हरिद्वार में परमोत्तम कुम्भ पर्व का योग होता है। कम्भ पर्व में सम्मिलित होने की महिमा इस प्रकार से है–

तान्येति यः पुमान योगे सोऽमृतत्त्वाय कल्पते।
देवा नमन्ति तत्रस्थान यया रंका धनाधिवान्।

जो मनुष्य कुम्भ महापर्व में सम्मिलित होकर स्नान करते हैं वे संसार बंधनों से मुक्त होकर अमृत–तत्व को प्राप्त करते हैं, उनके सामने देवतागण उसी प्रकार से नतमस्तक होते हैं जिस प्रकार धनवानों के सामने निर्धन मनुष्य होते हैं। कुम्भ पर्व में स्नान की महिमा का वर्णन निम्नवत है–

सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानं शतानि च।
वैशाखे नर्मदा कोटि, कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।
अश्वमेध सहस्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा पृथव्या कुम्भ–स्नानेन तत्फलम्।।

कुम्भ पर्व के समय हरिद्वार में स्नान की महिमा हजारों कार्तिक स्नान, सैंकड़ों माघ स्नान, करोड़ो वैशाखी, नर्मदा स्नान, हजारों अश्वमेध यज्ञ, सैंकड़ों वाजपेय यज्ञ और लाखों बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा के समान है।

तिस्रः कोटयोऽर्द्ध कोटीनां तीर्थानां मुनि सत्तम।
भजन्ते सन्निधि तत्र स्नानात् सर्वत्र जायते।।

कुम्भ पर्व के समय हरिद्वार में पृथ्वी के साढ़े तीन करोड़ तीर्थ एकत्र होते हैं। अतः उस समय हरिद्वार में स्नान करने से उन साढ़े तीन करोड़ तीर्थों का स्नान हो जाता है।

प्रमुख स्नान पर्व

14–15 जनवरी	मकर संक्रांति
15 जनवरी	मौनी अमावस्या
20 जनवरी	बसंत पंचमी
30 जनवरी	माघ पूर्णिमा
12 फरवरी	श्रीमहाशिवरात्रि (शाही स्नान)
15 मार्च	सोमवती अमावस्या (शाही स्नान)
16 मार्च	नवसंवतारंभ स्नान
24 मार्च	श्री रामनवमी
30 मार्च	चैत्र पूर्णिमा पर्व
14 अप्रैल	मेष संक्रांति (शाही स्नान)
28 अप्रैल	वैशाख अधिमास पूर्णिमा

'संगत संसार' का महाकुम्भ विशेषांक

हरिद्वार में सम्पन्न होने वाले महाकुम्भ के उपलक्ष्य में महाकुम्भ विशेषांक निकालने का निर्णय लिया है। यह विशेषांक अप्रैल 2010 को प्रकाशित होगा। माननीय विद्वानों व लेखकों से निवेदन है कि वे अपने लेख भेजने की कृपा करें। विज्ञापनदाताओं से निवदेन है कि वे अपने संस्थानों का विज्ञापन देकर लाभ उठाएं। कृपया सामग्री भेजने के लिए कार्यालय का पता – पृष्ठ 3 पर देखें। **सं.**

वामा

गुर भगत माल

बीबी बसन्त लता जी की साखी

श्री कलगीधर पिताजी की महिमा अपरम्परा है। श्री आनन्दपुर साहिब में चोजी प्रीतम ने बड़े चोज किए थे। अमृत तैयार करके गिदड़ों का शेर बणा दिया। धरम, अणख, सिदक, देशभक्ति और रब्बी प्यार की नई जोत जगाई। सदियों से गुलाब रहने के कारण भारत की नारी निर्बल होकर सच्च ही मरद की गुलाम बण गई और मरद से बहुत डरने लगी। सतिगुरु नानक देव जी ने जैसे स्त्री जाति को समानता और सतिकार देने का वचन दिया था। वैसे सतिगुरु जी ने स्त्री को बलवान बनाने के बदले अमृत छकण का हुक्म दिया। अमृत छक कर स्त्रियां सिंघणियां बनने लगी और वह धरम की रक्षा आप करने लगी और उनको पूर्ण ज्ञान हो गया कि धरम क्या चीज है? अधर्मी पुरुष किस प्रकार नारी को धोख देते हैं। सिदक के बेडे पार होते हैं।

ऐसी बहुत सी सिदकवान बीबीयों में से एक बीबी बसन्त लता थी, वह सतिगुरुजी के महल में श्री माता साहिब कौर जी के पास रहती और उनकी सेवा किया करती थी। नाम बाणी का सिमरण करने के साथ साथ वह बहुत दिलेर और निडर हो गई थी। उसने शादी नहीं की थी। स्त्री धरम को सम्भाल कर रखा था। उसका दिल बड़ा मजबूत और श्रद्धालु था।

बीबी बसन्त लता दिन रात माता साहिब कौर जी की सेवा में ही रहा करती थी। सेवा करके जीवन व्यतीत करने में खुशी अनुभव करती थी।

माता साहिब कौर जी की सेवा करते हुए बसन्त लता की उमर सोलह साल की हो गई। जवान हो गई देख कर माता पिता शादी करना चाहते थे। पर उसने इंकार कर दिया। कुछ और भी अकाल पुरख ने भाणे वरता दिए श्री आनन्दपुर पर पहाड़ी राजाओं और मुगल फौजों ने चढ़ाई कर दी। लड़ाई शुरू होने पर सभी खुशी के समागम रूक गए और सभी सिख तन मन और धन से नगर की राखी और गुरु घर की सेवा में लग गए।

बसन्त लता ने मर्दों की तरह वस्त्र पहने और मात साहिब कौर जी के महल में रहने लगी। सिख भी पहरा देते। उधर सिख सूरमें वीरों से लड़ते हुए शहीद होते। बसन्त लता का बाप भी लड़ता हुआ शहीद हो गया। इस तरह लड़ाई के अंधेरे ने सभी को दूर किया। बसन्त लता कुंवारी रही।

जैसे दिन में रात आ जाती है। झखड़ झोले शुरु हो जाते हैं। वैसे सतिगुरुजी और सिख संगत को श्री आनन्दपुर छोड़ना पड़ा। हालात ऐसे थे कि और टिकणा मुश्किल था। कुछ राजाओं और मुगल सेनापतियों ने धोखा किया। उन्होंने कुरान और गऊ की कसम खाई पर मुकर गए। भाणे ऐसे वरतणे थे।

सर्दी की रात, रात भी अंधेरी। उस समय सतिगुरु जी ने किला खाली करने का हुकम कर दिया। सभी ने अपणा घर और घर का सामान छोड़ा। माता साहिब कौर माता सुन्दर कौर जी भी तैयार हुई। उनके साथ सब सेवादार तैयार हुए। कोई पीछे रहकर दुश्मनें के रहिम पर नहीं रहना चाहता था। बसन्त लता जी आपणे सतिगुरु साहिब व माता साहिब कौर के साथ-साथ चलती रही। उसने वीर सिंघों की तरह वस्त्र धारण किए। चण्डी की तरह हौंसला था। वह रात के अंधेरे में चलते गए।

बसन्त लता ने कमर कसा किया हुआ और एक नंगी तलवार हाथ में ली थी। उसने पूरी हिम्मत की और माता साहिब कौर की पालकी के साथ रही, पर बलवान पाणी के वहिन ने उसे बिछोड़ दिया उनके रूडकर अलग हो गई और अंधेरे में पता नहीं लगा कि वह किधर जा रही थी। पीछे दुश्मन लगा था। नदी से पार हुई तो अकेली दुश्मनों के हाथ लग गई। **क्रमश....**

दिल्ली में सांझीवालता की एक झलक

-स. देवेन्दर सिंह गुजरा-दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष

जनवरी की 3 तारीख को दिल्ली गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के प्रकाश उत्सव के उपलक्ष्य में नगर कीर्तन निकाला गया। राष्ट्रीय सिख संगत ने अपने भव्य मंच(50 फुट व 30 फुट) का लगाया गया और आई हुई संगतों का फूलों की वर्षा कर स्वागत किया गया। बिस्कुट के पैकेट और फल संगतों में बांटे। सभी विभागों के कार्यकारिणी के सदस्यों ने भाग लिया। प्रमुख रूप से स. बी.एल. शर्मा (प्रेम सिंह शेर)-पूर्व सांसद, संगत संसार के संरक्षक स. विरेन्दर सिह जौहर, राष्ट्रीय महामंत्री संगठन श्री अविनाश जायसवाल, दिल्ली संगठन के प्रदेश प्रमुख श्री इन्दरजीत नाहल और सब विभागों के उपाध्यक्ष एवं महामंत्री अपने कार्यकर्ताओं के साथ उपस्थित रहे।

स. अवतार सिंह हित एवं स. मनजीत सिंह जी.के. ने भी हमारे मंच पर पहुंचकर आई संगतों का स्वागत किया और गुरु गोबिन्द सिंह जी के प्रकाश उत्सव की संगतों को बधाई दी। गुरुजी के द्वारा बताए हुए पद्चिहनों पर चलने के लिए अपना भाषण दिया। स. हरभजन सिंह दियोल ने गुरुजी के प्रकाश उत्सव और उनके सरबंस दानी के ऊपर एक सुंदर कविता पढ़ी। दास ने भी आई संगतों का स्वागत किया और श्री गुरुग्रंथ साहिब जी की पालकी आने पर पांच प्यारों का फूल माला से सभी ने स्वागत किया। राष्ट्रीय सिख संगत के सभी पदाधिकारियों ने श्री गुरुग्रंथ साहिब जी को माथा टेककर रूमाला और प्रशाद भेंट किया।

विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा के दिल्ली पहुंचने पर आउटर रिंग रोड पर तीन जगहों-मंगोलपुरी, पश्चिम विहार और विकास पुरी में सिख संगतों ने मिलकर यात्रा का भव्य स्वागत किया। मट्ठी, किन्नु और बिस्कुट का प्रशाद वितरण किया गया। इसके बाद उत्तमनगर में नामधारी सिख संगतों एवं राष्ट्रीय सिख संगत के कार्यकारिणी के सदस्यों ने गाय की रक्षा के लिए एवं गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित करने के लिए भाषण दिया। दास ने नामधारी रामसिंह जी ने गाय को बचाने के लिए किये गये आन्दोलन की सराहना की। गाय की रक्षा के लिए और गौशाला के कार्य में नामधारी सिखों का बहुत बड़ा योगदन है।

24 जनवरी को नामधारी सिख संगत ने नामधारी रामसिंह जी का जन्मदिन एवं बसंत पंचमी का समारोह रमेश नगर गुरुद्वारे में किया। राष्ट्रीय सिख संगत को आमंत्रित किया गया। दास, प्रदेश महामंत्री स. अवतार जुनेजा और सहयोगी इस समारोह में शामिल हुए। नामधारी सभा के स. जसबीर सिंह कोना ने सुबा सुखदेव सिंह जी से दास और जुनेजा जी का स्वागत करवाया। इस अवसर पर बोलने का समय भी दिया। दास ने रामसिंह जी के जन्म दिन पर संगतों को बधाई दी एवं उनके पद्चिह्नों पर चलने के लिए आग्रह किया। इस समारोह में दहेज रहित सामुहिक विवाह करवाए गए। जोकि बहुत ही सराहनीय दृश्य था।

26 जनवरी को उत्तरी विभाग के अध्यक्ष एवं दिल्ली के उपाध्यक्ष स. मलकीयत सिंह जी ने सांझीवालता के उदाहरण देते हुए नरेला गुरुद्वारे में गुरु गोबिन्द सिंह जी का प्रकाश उत्सव आयोजित किया और राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य स. उजागर सिंह, स. जसपाल सिंह मनचंदा, स. हरदेव सिंह परदेशी, स. बाबु सिंह दुखिया, स. महिन्दर सिंह बाली एवं स. जसविन्दर सिंह बंट्टी इस उत्सव में शामिल हुए। गुरुद्वारे के प्रबंधकों ने सबका स्वागत किया और स. उजागर सिंह जी ने गुरुजी के जीवन इतिहास के बारे में अपना भाषण दिया। परेदश्सी जी ने सुन्दर कविता के रूप में गुरुजी की प्रशंसा की।

दास ने भी गुरुजी के प्रकाश उत्सव की सभी संगतों को बधाई दी और बेनती की कि छोटी उमर से ही बच्चे बच्चियों को गुरुबाणी से जोड़े, ताकि वो माता पिता के आज्ञाकार और उनका ध्यान रखने वाले बने और उनका अपना भविष्य और चरित्र समाज के लिए उदाहरण बन सके।●

रंगनाथ मिश्र आयोग रिपोर्ट– एक राष्ट्र विरोधी दस्तावेज

लोकसभा में प्रस्तुत की गई रिपोर्ट न केवल भारत के पिछड़े वर्ग व अनुसूति वर्ग के अधिकारों पर खुला डाका है अपितु कम्यूनल अवार्ड की तरह भारत के एक और विभाजन का दस्तावेज है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय कई मामलों में धार्मिक आधार पर आरक्षण का विरोध कर चुकी है। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों को पलटने के लिए इस आयोग की स्थापना की गई थी। सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश व कांग्रेस के राज्यसभा सांसद रह चुके श्री रंगनाथ मिश्र ने अपने कार्य को योजनापूर्वक पूरा करते हुए मुस्लिम समाज के लिए 10 प्रतिशत व अन्य अल्पसंख्यकों को 5 प्रतिशत आरक्षण देते हुए उन्हें पिछड़े वर्ग (ओबीसी) में शामिल किया हे। यह आरक्षण केवल सरकारी नौकरियों में नहीं सभी शैक्षणिक संस्थाओं पर भी लागू होगा। अल्पसंख्यकों में भी केवल मुस्लिम समाज को अधिक लाभ देने के लिए यह प्रावधान किया गया है कि अगर अन्य अल्पसंख्यकों के 5 प्रतिशत कोटे को नहीं भरा जा सका तो मुस्लिम समाज से यह रिक्तता भरी जायेगी। यह रिक्तता बहुसंख्यक समाज ने नहीं भरी जा सकती। उन्हें यह आरक्षण भारत के पिछड़े वर्ग के अधिकारों में कटौती करके दिया जाएगा जो किसी भी हालत में स्वीकार्य नहीं है।

रंगनाथ मिश्र आयोग की दूसरी अनुशंसा कि इसाईयत व इस्लाम में धर्मान्तरित अनुसूचित जाति के व्यक्ति धर्मान्तरण के बाद भी अपनी पूर्व जाति के माने जायेंगे व उन्हें पहले की तरह आरक्षण का लाभ मिलेगा, पूर्णरूपेण संविधान विरोधी है। भारतीय संविधान स्पष्ट रूप से कहता है कि अनुसूचित जाति का विषय केवल हिन्दुओं तक सीमित है। बाद में इसका विस्तार कर इसमें सिखों और बौद्धों को इसलिए शामिल किया गया क्योंकि वे भी हिन्दू समाज की सांझी परम्परा के वाहक हैं। यदि अनुसूचित जाति के ईसाई व इस्लाम में धर्मान्तरित लोगों को अनुसूचित जाति के ईसाई व इस्लाम में धर्मान्तरित लोगों को अनुसूचित जाति के अधिकार दे दिये गए तो यह न केवल संविधान की मूल भावना के विरोध में होगा अपितु अनुसूचित जाति के लोगों के रोजगार के अवसर समाप्त कर देगा। इस्लाम व इसाई धर्म के लोग अपनी राजनीतिक ताकत व अधिक साक्षरता के कारण सरकारी नौकरियां हड़प लेंगे तथा पहले से पिछड़े लोग और पिछड़ते जाएंगे।

यह विषय अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने के मामले तक ही सीमित नहीं है। उन्हें अनुसूचित जाति में शामिल करने का परिणाम यह होगा कि अनुसूचित जाति के लोग केवल नौकरियों से ही वंचित नहीं होंगे बल्कि पंचायत, विधानसभा, क्षेत्रीय निकाय और संसद के साथ साथ प्रशासनिक एवं पुलिस सेवाओं में भी उनको हानि और अल्पसंख्यकों को भारी लाभ मिलेगा। इससे धर्मान्तरण को बल मिलेगा एवं जनसंख्या का समीकरण प्रभावित होगा। देश में धार्मिक आधार पर वैमनस्य बढ़ेगा जो गृहयुद्ध की स्थिति तक जा सकता है।

ये अनुशंयायें भारत के मुस्लिम एवं इसाई समाज में पहले से विद्यमान अलगाव की भावना को और मजबूत करेगी। कभी कभी भारत के एक और विभाजन की धमकी देने वालों को इस आयोग के कारण अपने नापाक इरादों के लिए एक और कुतर्क मिल जाएगा। ऐसा लगता है कि ये अनुशंसायें भारत के एक और विभाजन का आधार बन सकती है।●

दानी फकीर गुरु रविदास

रामभक्त संत रविदास अपने कष्टों की परवाह न करते हुए जो कुछ भी कमाते थे, उसे दीन दुखियों के बीच बांट देते थे। उनके द्वारा लगभग 40 दोहों को श्री गुरुग्रंथ साहिब में शामिल किया गया है।

श्री कृष्ण भक्त मीराबाई उन्हें अपना गुरु मानती थी। मांघी पूर्णिमा के दिन भारत भर में संत रविदास जयंती मनाई जाती है।

पुनः शान्तता मार्ग

श्री गुरु हरिराय जी सिखों के सातवें गुरु थे। उनका जन्म माघ शु. 13 संवत 1687 अर्थात् 30 जनवरी 1630 ई. में कीरतपुर में हुआ था। श्री गुरु हरगोबिन्द सिंह जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गुरु दित्त जी के गुरु हरिराय जी द्वितीय पुत्र थे। श्री मॅकालिफ जी के मतानुसार श्री गुरु हरिराय जी की माता जी का नाम निहाल कौर था और श्री त्रिलोचन सिंह जी उनकी माताजी का नाम राजकौर लिखते हैं।

मन की कोमलता-श्री गुरु हरिराय अत्यन्त मृदु स्वभाव के थे। बचपन में जब आप बगीचे में घूमने जाते थे तब आपके पैर तक लटकने वाले वस्त्रों के कारण यदि फूल झड़ जाते तो आपको अत्यंत दुख होता था। बगीचे में श्री गुरु हरगोबिन्द जी बैठे थे उन्होंने श्री हरिरायजी को उपदेश दिया था कि ईश्वर की सृष्टि से अत्यंत कोमलता से व्यवहार करना चाहिए। तब से वे हमेशा अपने वस्त्र थोड़े ऊपर उठाकर चलते थे।

गुरुपद पर प्रतिष्ठापना-श्री गुरु हरगोबिंद जी के ज्योति जोत समा जाने के बाद श्री हरिराय जी जब गुरु पद पर आसीन हुए तब वे केवल 14 वर्ष के थे। अपने पितामह की आज्ञानुसार आपने अपने पास 2200 घुड़सवार रखे थे।

श्री गुरु हरिराय जी की पत्नी का नाम सुलखनी था। श्री गुरु हरिराय जी एवं सुलखनी जी को तीन पुत्र हुए थे। बड़ा पुत्र रामराय (जन्म सन् 1647) मझली कन्या सरूपकौर (जन्म सन् 1951) और सबसे छोटे हरिकिशन (जन्म सन् 1656)।

श्री गुरु हरिराय जी शिकार करने अवश्य जाते थे। किन्तु प्राणियों को मारते नहीं थे। उन्हें हिरन अतिप्रिय थे। उन्हें पकड़कर अपने प्राणिसंग्राहलय में रखते थे। उनका दवाइयों का भी संग्रह था। शहाजहांन बादशाह का बड़ा लड़का दारा शिकोह जब बहुत बीमार हुआ था तब श्री गुरु हरिराय जी द्वारा भेजी हुई दवाइयों से ही ठीक हुआ था। दाराशिकोह और श्री गुरु हरिराय जी के संबंध बहुत अच्छे थे। दारा श्री गुरु हरिराय जी से मिलने के लिए आया करते थे।

सिख मत (विचारों) का प्रसार-श्री गुरु हरिराय जी बारह वर्षों तक नहान में रहे। वहीं से आस-पास के गांवों में सिख विचारों का प्रसार करने के लिए जाया करते थे। सन् 1658 ई. में वे अपने प्रचार दौरे में रूपार, फगवाड़ा कीरतपुर, बकाला, अमृतसर आदि स्थानों में गये थे। उन्होंने अपने पंथ प्रचारक सिखों को काबुल राजस्थान, दिल्ली और पूर्वी हिन्दुस्थान भेजा था। पूर्ववर्ती श्री गुरुओं की तरह अपने भी बड़ी श्रद्धा के साथ लंगर चालू रखे थे। उनका आदेश था कि लंगर में प्रसाद पाने का समय समाप्त हो जाने के बाद भी यदि कोई सिख आवे, तो वह कभी भूखा न जाने पावे।

फूल नामक एक निर्धन बालक को श्री गुरु हरिराय जी ने आशीर्वाद दिया था। आख्यायिका है कि यह बालक फूल पटियाला, नाभा, जिंद और फरीदकोट के सिख राज्य का संस्थापक था।

आदि गुरुग्रंथ साहेब विषयक विचार-श्री गुरु नानकदेव जी ने अर्थ समझे बिना किये गये गुरुपाठ की निन्दा की है। किंतु श्री गुरु हरिराय जी के विचार उनमें भिन्न थे। उनके विचार से यदि ग्रंथ का अर्थ समझ में न भी आए तो भी ग्रंथ का पठन अवश्य करना चाहिए। क्योंकि उसमें मुक्ति के बीच छिपे ने के कारण पढ़ते रहने से थोड़ा तो भी लाभ अवश्य होता है। जैसे पुष्पपात्र टूटने के बाद भी उसमें रखे फूलों की थोड़ा बहुत सुगंध उसमें अवश्य रहती ही है। श्री हरिराय जी ने काव्य रचना नहीं की थी।

शहाजहान बादशाह के पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए लड़ाई-सन् 1656 ई. में शहाजहान बहुत बीमार पड़ा तब उसके उत्तराधिकार को लेकर उसके पुत्रों में आपस में झगड़ा शुरु हो गया। शहाजहान का झुकाव दाराशिकोह की ओर अधिक था। शहाजहान के तीसरे पुत्र औरंगजेब ने दारा का पीछा किया। दारा और श्री गुरु हरिराय जी के परस्पर बहुत अच्छे संबंध थे। दाराशिकोह विद्वान होने के साथ साथ दयालु, सूफियों को और उपनिषदों को चाहने वाला था। श्री गुरु हरिराय जी ने बिआस के दूसरे किनारे पर अपनी सेना खड़ी कर दी थी। इसलिए उस समय औरंगजेब

दारा को नहीं पकड़ सका था।

दारा सख्त स्वभाव का नहीं था। दारा की अपेक्षा औरंगजेब राजनीति और युद्धनीति में कहीं अधिक कुशल था। दारा और औरंगजेब की आपसी लड़ाई में दारा का आत्मविश्वास डगमगा गया। इसलिए नुरपुर के राजा के समान सहायक उसके आत्मविश्वास के अभाव में उसे छोड़कर चले गये। श्री गुरु हरिराय जी ने भी उससे अधिक दारा की सहायता नहीं की थी। जहां दारा की इतनी विशाल सेना परास्त हो गई वहां श्री गुरु हरिराय जी की 22 घुड़सवारी की सेना कैसे ठहर सकती थी। कुछ ही दिनों में औरंगजेब ने दारा को पकड़ लिया और अपमानित करके 3 अगस्त 1669 ई. के दिन बड़ी क्रूरता से मार डाला।

औरंगजेब बादशाह का क्रोध–औरंगजेब इस बात को कभी भूल नहीं सका कि मुगल सिंहासन के लिए अब आपस में लड़ाइयां हो रही थी श्री गुरु हरिराय जी ने दारा की मदद की थी। गद्दी पर बैठते ही उसने श्री गुरु हरिराय जी को दिल्ली बुलाया और उनसे लगान (निस्ताधन) देने के लिए कहा। इस पर श्री गुरु हरिराय जी ने उत्तर दिया कि 'न तो मैं कोई राजा हूँ जिससे तुम्हें कर दूं और न ही मैं तुम्हारा गुरु हूं और तुम मेरे शिष्य हो जो मैं दिल्ली जाऊं।'' ऐसा उत्तर भेजकर उन्होंने दिल्ली जाने से इंकार कर दिया। किन्तु बड़े पुत्र रामराय को दिल्ली में औरंगजेब के दरबार में भेज दिया था।

श्री गुरु हरिराय जी की रामराय जी पर नाराजगी–औरंगेजब की सभी शंकाओं का समाधान करने के पश्चात वापस श्री गुरुदेव जी के पास लौटकर आने के बदले श्री रामराय जी औरंगजेब के दरबार में ही रुक गये और एक के बाद एक चमत्कार दिखाते रहे। यह बात श्री गुरु हरिराय जी को बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी और भी एक अपराध श्री रामराय जी ने दरबार में किया था। श्री गुरु नानकदेव जी के पद की पंक्ति का विपरीत अर्थ लगाकर अपनी इच्छानुसार शब्दों को उलटफेर करना। इससे पद की पवित्रता भंग करने का अपराध श्री रामरायजी के हाथों में हुआ था।

एक बार यह मान भी लिया जाए कि श्री रामराय जी आयु में छोटे थे और मुगल बादशाहों के जघन्य अत्याचारों के शिकार हुए श्री गुरु अर्जुनदेव जी एवं गुरु हरगोबिन्द जी की दीर्घकालीन कारावास उन्हें स्मरण आया हो और इस संकट से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने एक के बाद एक कई चमत्कार कर दिखाये हों। इस बात का तो उनके पक्ष में समर्थन किया जा सकता है किन्तु श्री गुरुग्रंथ साहिब में बदल करना, उनमें नये शब्द डालना आदि बातों को प्रत्येक सिख ने हमेशा ही निन्दनीय कार्य माना है।

श्री रामराय जी के साथ गये हुए सिख ने लौटकर जब श्री गुरु हरिराय जी को श्री रामराय जी द्वारा औरंगजेब को दिया गया 'मिट्टी मुसलमान की' का स्पष्टीकरण बताया तब श्री गुरु हरिराय जी क्रोधित हो उठे। उन्होंने सोचा संकटकाल में झुकने वाला व्यक्ति गुरुपद के लिए अयोग्य होता है। श्री गुरुपद के उच्च आदर्शों के प्रति श्री गुरु हरिराय जी की भावनायें दृढ़ एवं सुसंगत थीं। गुरुपद शेरनी का दूध होता है। उसके योग्य केवल सुवर्णपात्र ही होता है। जो अपना जीवनसर्वस्व गुरुपद के लिए समर्पित करेगा वही उसे स्वीकार करने योग्य होता है। श्री गुरु हरिराय जी ने कहा कि 'मुझे श्री रामराय जी का मुखावलोकन भी नहीं करना है।'

मृत्यु–कार्तिक वद्य संवत 1718 अर्थात् 6 अक्टूबर 1661 को अपनी आयु के 32वें वर्ष श्री गुरु हरिराय जी कीरतपुर में ज्योति जोत समा गये। 14, 15 मैकालिक और श्री त्रिलोचन सिंह जी ने श्री गुरु हरिराय जी की पुण्यतिथि कार्तिक वद्य 9 दी हुई है।

पुनः शान्ति का मार्ग–अन्तिम चारों गुरु अल्पायु रहे। इसके विपरीत इन चारों गुरुओं के समकालीन मुगल बादशाह औरंगजेब दीर्घायु रहा। धक्के से फूल गिर जाने पर दुखी होने वाले कोमल स्वभाव के श्री गुरु हरिराय जी को मुगलों के साथ संघर्ष होना असंभव ही था और वह हुआ भी नहीं। मुगल तख्त के उत्तराधिकारी की लड़ाईयों में दारा को जो थोड़ी बहुत मदद की थी, बस वहीं लड़ाई की घटना हुई। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने जो शस्त्र धारण करने का तथा संघर्ष करने का मार्ग अपनाया था उससे हटकर श्री गुरु हरिराय जी के कार्यकाल में पुन: शान्ति के मार्ग का अवलंबन किया गया। ●

बलिदानी वीर हकीकत राय

- महेन्दर नागपाल, फरीदाबाद

शाहजहाँ के शासन काल में पश्मिची पंजाब (पाकिस्तान) के प्रसिद्ध शहर सियालकोट के एक खत्री परिवार में एक बालक ने 1718 ई. को जन्म लिया। माता श्रीमती गौरी देवी व पिता श्री भागमल जी थे। पंडितों के द्वारा बच्चे का नाम हकीकत रखा गया। 15 वर्ष की आयु में हकीकत राय को एक विद्वान पंडित से हिन्दी-संस्कृत पढ़ने भेजा गया। छोटी उम्र में धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के कारण हिन्दु संस्कार बच्चे में कूट-कूट कर भर गए थे। उस समय की प्रथा के अनुसार हकीकत की शादी 11 वर्ष की आयु में एक सिख परिवार स. विद्वान सिंह की पुत्री लक्ष्मी देवी के साथ हुई।

पिता ने फारसी-उर्दू पढ़ने हेतु हकीकत को एक मौलवी के पास भेज दिया, जहां पर और भी मुसलमान बच्चे पढ़ने आते थे। एक दिन मौलवी किसी काम से बाहर गए हुए थे। सभी बच्चे पढ़ने की बजाए खेल-कूद में लग गए पर हकीकत को अच्छा नहीं लगा और पढ़ने बैठ गया। सभी मुसलमान बच्चे उसे तंग करने लगे और हिन्दु धर्म की निन्दा भी करने लगे। बच्चों ने माँ दुर्गा के लिए अपशब्दों का प्रयोग कर दिया। हकीकत ने कहा, कि अगर मैं ये शब्द आपके पैगम्बर की लड़की बीबी फातिमा के लिए कहूं तो आपको कैसा लगेगा। इतना सुनते ही सभी बच्चों ने हकीकत को मारना शुरु कर दिया। थोड़ी देर बाद मौलवी आ गया और सभी ने मिलकर शिकायत की कि इसने बीबी फातिमा को गाली दी है। हकीकत ने अपनी सफाई में सारी बात बता दी पर मौलवी नहीं माना और उसे काज़ी के पास ले गया।

काज़ी ने सारी बात मौलवी की सुनकर यह फैसला दिया कि अगर तुम मुसलमान बन जाओ, अन्यथा तुम्हारा सिर तलवार से काट दिया जाएगा। हकीकत ने मुस्करा कर कहा कि, ''मैं अपने प्राणों से भी हिन्दु धर्म को तिलांजलि नही दे सकता'' आपकी तलवार हकीकत को काट सकती है मेरी आत्मा को नहीं। धर्म कहता है आत्मा अमर है। एक बालक से मुंह से धर्म की बात सुनकर काज़ी चकित हो गया। पर उसने अपना फैसला नहीं बदला। काज़ी ने हकीकत को मुसलमान बनने के लिए कई प्रकार के लालच दिए पर वीर हकीकत पर उसकी बातों का कोई असर नहीं हुआ। काज़ी ने कुरान की शरीयत का नाम लेकर हकीकत को कोड़े लगाए पर हकीकत विचलित नहीं हुआ और हकीकत को कारागार में डाल दिया गया।

इस समाचार को सुनकर हकीकत के माता पिता काज़ी के पास गये और क्षमा मांगते हुए बोले, ''यह अभी बच्चा है गलती से इसके मुंह से निकल गया होगा आप इसे क्षमा कर दो।'' काज़ी ने उसके माता पिता की ओर देखते हुए कहा कि सज़ा एक तरीके से माफ हो सकती है कि यह मुसलमान बन जाए। काज़ी की बात सुनकर हकीकत अपनी मां की ओर देखते हुए कहा कि आप ने ही तो मुझे प्राचीन कथाएं सुनाकर धर्म की राह पर चलने के लिए कहा है। अब मैं इस पवित्र मार्ग को कभी नहीं छोड़ूंगा। यह मेरा एक प्रण है अगर हजार बार भी मुझे अपने प्राण धर्म की रक्षा हेतू देने पड़े तो भी मैं पीछे नहीं हटूंगा। मां आज तू मोह में पड़कर मुझे धर्म छोड़ने की बात क्योंकर रही है।

सभी हिन्दु इकट्ठे होकर नगर प्रमुख के पास गये। अमीर बेग ने भी कोई निर्णय न देकर मुकदमा मुख्य काज़ी के पास लाहौर भेज दिया। मुख्य काज़ी के पास भी कोई निर्णय नहीं हुआ और सजा वैसी ही रही। कि मुसलमान बन जाओं या सजाए मौत। हकीकत की धर्मपत्नी ने भी उसे मुसलमान बनने के लिए कहा पर हकीकत ने उसकी बात भी नहीं मानी। हकीकत ने अपनी पत्नी से कहा कि तुम्हारा सिर गर्व से ऊंचा होना चाहिए कि तुम्हारा पति हिन्दू धर्म न छोड़ने के लिए शहीद हो रहा है।

सन् 1734 बसन्त पंचमी के दिन काज़ी की आज्ञा से जल्लाद ने हकीकत का सिर तलवार से काट दिया। लाहौर से 5 मील दूर रावी नदी के तट पर चन्दन की लकड़ी की चिता बना कर अन्तिम संस्कार कर दिया। बाद में वहां समाधि भी बनाई गई। प्रतिवर्ष बसंत पंचमी के दिन वहां मेला लगता है। आज भी हकीकत की कुरबानी को भुलाया नहीं जा सकता। ●

नामधारी इतिहास-महान बलिदान

- स. सुखदेव सिंह नामधारी

नामधारी सिखों द्वारा आध्यात्मिक प्रवृत्ति को श्रेष्ठत्तर बनाना, रहत-बहत में परिपक्व रहना, विशुद्ध रूप में स्वदेशी के विचार का धारणी बनना, संगठन खड़ा करना और अंग्रेजों के विरुद्ध राजनैतिक एजेण्डों को आगे ले जाना भारत के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। यह सत्य है कि नामधारियों के कारण अंग्रेज हुकूमत की नींद हराम हो चुकी थी, जो सारी दुनियां पर राज कर रही थी। अंग्रेजी साम्राज्य ने इस कूका लहर का दमन करने के लिए परमपूजनीय बाबा रामसिंह जी महाराज और उनके प्रमुख सूबों को 18 जनवरी 1872 ई. को जिलावतन कर दिया। पहले लुधियाना रेलवे स्टेशन से रेल मार्ग द्वारा प्रयागराज (इलाहाबाद) के किले में भेजा गया। जिसके बारे में डब्ल्यू.एम. सौथर (सहायक सचिव) ने अपने रिपोर्ट में लिखा है कि-

'' मैं बंगाल रेग्यूलेशन-3 एक्ट 1818 तहत 11 वारंट बाबा रामसिंह कूका और उनके साथियों के लिए भेज रहा हूं, जिनको पंजाब सरकार ने इलाहाबाद भेजा हैं।''

महाराज जी से अंग्रेजी सरकार इतना भय खा रही थी कि ब्रिटिश बर्मा के चीफ कमीश्नर लिखते हैं कि-

''वह बहुत खतरनाक आदमी है। भारत में शायद इस समय सबसे ज्यादा खतरनाक और उसके साथ किसी भी प्रकार के पत्र व्यवहार पर रोक लगाई जानी चाहिए।''

बाबा जी के साथ उनके सूबे भाई नानू सिंह गड़वई, भाई गुरदित्त सिंह गडढेवाला, सूबा साहिब सिंह, बाबा जवाहर सिंह थे। बाद में सूबा साहिब सिंह और बाबा काहन सिंह को सख्त सजाएं देने के लिए हजारीबाग की जेल में भेज दिया। 21 मई 1875 की एक सरकारी रिपार्ट के अनुसार सूबा साहिब सिंह को एक गम्भीर बीमारी ने घेर लिया। 10 जून, 1879 को सूबा साहिब सिंह ने, भारत का महान सपूत, हजारीबाग जेल में शरीर त्यागा।

अंग्रेज हुकूमत तो नामधारी सिखों पर रोक लगाने का बहाना ढूंढ रही थी। मलेर कोटला के साके ने वह मौका दे दिया था। अंग्रेजों ने परमपूजनीय बाबा रामसिंह जी को हिरासत में लेकर इलाहाबाद और फिर देश निकाला देकर बर्मा में रंगून और मरगोई में कैद में रखा। बाकी सूबों को हिरासत में रखकर उम्र भर विदेश की जेलों मरगोई, असीरगढ़, अदन, चुनार और हजारीबाग आदि में कैद कर लिया। जहां उन्होंने शहीदी प्राप्त की। नामधारी सिंघों के मुख्य केन्द्र श्री भैणी साहिब के गुरुद्वारे के बरामदे के आगे पुलिस चौकी बैठा दी गई, जो लगातार 51 साल तक रही। गुरुद्वारे के अन्दर दर्शन करने वालों को रजिस्टर में नाम दर्ज कराकर पांच की गिनती में अन्दर जाने दिया जाता था।

सभी नामधारी सिंघों के साथ जरायम पेशा लोगों वाला व्यवहार किया जाने लगा। 1872 के Criminal Procedure Act X की धारा 504-505 के तहत सरकार ने अच्छे चाल चलन की जमानतें मांगनी प्रारम्भ कर दी थी। जमानत न देने की स्थिति में देशभक्त कूकों को जुर्माना देना होता था या कैद काटनी पड़ती थी।

Encyclopaedia of Britanica Ed. 1902 में नामधारी सिंघों के बारे में लिखा है कि-

- कूका झूठ नहीं बोलता।
- कूका शराब नहीं पीता।
- कूका गुरुगोबिन्द सिंह का कट्टर सिख है।
- कूका अंग्रेज का कादार नहीं हो सकता।

सूबा अरूड़ सिंह, सूबा मलूक सिंह और सूबा पहाड़ा सिंह जी को बम्बई प्रेसीडेंसी के किला असीरगढ़ में कैद रखा गया। सूबा जवाहर सिंह, सूबा लक्खा सिंह और सूबा ब्रह्मा सिंह को जिलावतन करके मौलमीन लोअर बर्मा की जेल में नजरबंद किया गया। सूबा मानसिंह और सूबा हुक्मा सिंह को चूनार यूपी की जेल में बंद किया गया।

बाबा रामसिंह जी ने नामधारी लहर को आजादी की

लहर बना दी थी। धार्मिक, सामाजिक कुरूतियों को दूर करने के लिए उस वक्त के धर्म के ठेकेदारों, महन्तों, पुजारियों का विरोध पूरे जोर से किया। अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध राजसी चेतना का निर्माण करके स्वदेशी का परचम लहराया। रंगून जेल में रहकर बाबा जी ने संगत के नाम हुक्मनामे भेजे। वे समाज के साथ सदैव संवाद बना रहे इसके इच्छुक थे। हुक्मनामा संख्या 5 में वे लिखते हैं-

''जिस स्थान पर मैं रह रहा हूं, यहां कभी बहादुर शाह जफर रहते थे। वह मर गया। हम अभी जी रहे हैं। यहां न कोई बोलने देता है और न कोई खड़े होने देता।''

हुक्मनामा संख्या 18 में महाराज जी लिखते है-

''खालसा जी सबने बाणी कंठ करनी कुड़ी मुंडे ने, नाले माला फेरनी। पंजग्रंथ जो पढ़ूंगा उसनूं बहुत फायदा होउगा।''

हुक्मनामा संख्या 20 में लिखा है कि-

''ऐहो हुक्म है जो अठारह बरसा दी लड़की, बीस बरस दा लड़का होवे तां बियाह करना, उरे नहीं करना। ओह हुक्म ऐसे संत खालसे वास्ते लिख्या है।''

20 जनवरी 1872 ई. को कर्नल बेली ने श्री भैणी साहिब की तलाशी ली। डेरे में से संगत को निकाल दिया गया था। डेरे में केवल बाबा जस्सा सिंह जी, बाबा बुद्ध सिंह जी, बीबी नन्दा बच्चों समेत, स. वरियाम सिंह ही अन्दर रहें। गुरुद्वारे की तलाशी ली गई। पानी के तलाब तक ध्वंस्त कर दिए गए, केवल यह देखने के लिए कि कहीं कोई हथियार तो नहीं छुपाकर रखे थे। फिर उस क्रांतिकारी मंदिर के बाहर पुलिस चौकी बैठा दी गई। इस प्रकार परमपूजनीय बाबा रामसिंह जी को रंगून में जिलावतन करके पहुंचा दिया गया। जहां हुकूमत की सख्त निगरानी और अनेकों कठिनाईयों के बावजूद सिख भेष बदलकर उनसे मिलते रहे और हुक्मनामे लाते रहे। 18 सितम्बर 1880 के दिन आपजी को मगरोई जेल में लाया गया। 14 नवम्बर 1881 को आपके निजी सेवक भाई नानू सिंह जी को मगरोई से वापस पंजाब भेज दिया गया। जो बाकी जीवन ग्राम रूड़की जिला पटियाला बिता पाए। इस मगरोई जेल में महाराज जी अकेले ही रह गए। अन्त अगस्त 1886 को किसी दूरस्त स्थान पर भेजा गया बताया गया। क्योंकि सिखों का बाबा जी के साथ मगरोई में सम्पर्क बना हुआ था। महाराज जी के दर्शन जल्दी हों, इसके लिए संगत ने अखंड पाठ मर्यादा प्रारम्भ की, परन्तु सरकार ने इन पाठों में लगे हुए पाठियों व लांगरी सिखों को 6 महीनें से 7 साल तक की सजा करवाई।

बाबा जी के संबंध में शहीद भगत सिंह ने ''महान कूका लहर'' में लिखा है-

''उन्होंने उस समय असहयोग लहर का प्रचार शुरु किया, जो 1920 में महात्मा गांधी ने किया। उनकी असहयोग लहर महात्मा गांधी के असहयोग सत्याग्रह से कई बातों में ज्यादा महान थी।....''

अकाली मास्टर तारा सिंह लिखते हैं-

''इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि उन्होंने सिखों में गुरमत को दृढ़ किया और विदेशी सरकार के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन लहर चलाकर सिखों को देशभक्ति का पाठ पढ़ाया।''

श्रीमान भाई परमानन्द जी का कथन है-

''यदि सब लोग अंग्रेजी सरकार के साथ सहयोग करना छोड़ दें तो यह राज जा सकता है। उन्होंने अपने देश में क्रांति लाने के लिए बड़े बड़े सिद्धान्त बनाएं।''

पं. जवाहर लाल नेहरू जी ने सन् 1938 में 'सतयुग' में लिखा है-

''बाबा रामसिंह जी ने अपनी मात्रभूमि को स्वतंत्रा दिलवाने के लिए आज से पौन सदी पहले जो महान गौरवशाली परिश्रम किया था, उसकी महानता से कोई भारतीय इंकार नहीं कर सकता। कांग्रेस ने आपके दिखाए हुए रास्ते को इख्तियार करके शानदार कामयाबी प्राप्त की।''

प्रसिद्ध लेखक स. खुशवन्त सिंह लिखते हैं-

''नामधारी सिखों का भारत की स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में शानदार स्थान है। वे असहयोग आन्दोलन व स्वदेशी प्रचार को राजनैतिक शस्त्र के रूप में प्रयोग करने वाले जनक थे।''●

स्वास्थ्य दर्पण

-**डॉ. कमल हाण्डा**, मुम्बई

भोजन के समय ध्यान

हम रोज भोजन करते हैं। कुछ लोग जीने के लिए खाते हैं, तो कुछ अपनी जिह्वा को तृप्त करने के लिए खाते हैं। यदि हम विचार करें, तो पाएंगे कि यह भी ध्यान का माध्यम बन सकता है। इधर-उधर भटक रहे मन को समेटकर जब एक स्थान पर केंद्रित किया जाता है, तभी हम ध्यान की अवस्था में जा पाते हैं। ठीक उसी तरह खाते वक्त यदि दिमाग को अन्य समस्याओं में उलझाने की बजाय हम सीधे आहार पर केंद्रित करते हैं, तो न केवल हमें स्वाद, बल्कि आत्मसंतुष्टि भी मिलती है। वेद में कहा गया है-

अन्नं ब्रह्मा रासो विष्णु पक्तो देवी महेश्वरः।
इवं ज्नत्वा तू यो भुंक्ते अन्न दोषी न लिप्यते॥

यानि ब्रह्मा हमें अन्न देते हैं, विष्णु स्वाद लेने की क्षमता देते हैं और शिव इसे पचाने में हमारी मदद करते हैं। जब हम इस ज्ञान के साथ भोजन करते हैं, तो यह रोग रहित होता है। इसलिए आप जब भी भोजन करें, तो आदर भाव के साथ इधर-उधर से दिमाग हटाकर सिर्फ उसी पर ध्यान केंद्रित करें। आप देखेंगे कि भोजन करना आपके लिए प्रार्थना के समान बन गया है। ओशो राजयोग मेडिटेशन सेंटर की मां प्रेम नयना बताती है कि भोजन करते समय भी आप ध्यान में जा सकते है। ओशो के अनुसार, आप जो भी क्रिया करें, उसमें पूरी तरह समर्पित हो जाएं। सचेत हो जाएं। बिना सचेत हुए किसी भी कार्य को सौ प्रतिशत सफल नहीं बनाया जा सकता।

जब भोजन करें, तो आपका ध्यान थाली और उसकी सामग्रियों पर ही हो। आनंदित होकर या रस लेकर भोजन करें। आप पाएंगे कि आपका शरीर, दिमाग और आत्मा तीनों एक लय-ताल में आ गए हैं। तीनों में एक गहरा रिदम स्थापित हो गया है। यदि आप ध्यान केंद्रित कर कोई भी काम करते हैं, तो भोजन लेना, कुएं से पानी निकालना, टहलना, लकड़ी तोड़ना और भोजन पकाना भी ध्यान का माध्यम बन सकता है।

भोजन करना ध्यान का सबसे सरल तरीका है। इसमें शर्त बस इतनी है कि आप चैतन्य होकर इसे अजमाएं। इस विधि की खोज बौद्ध समुदाय ने की थी, जिसे बहुत बाद में पश्चिम में यहूदी समुदय ने अपनाया। जे. माइकेलसन ने अपनी किताब 'गॉड इन योर बॉडी' में 'इटिंग मेडिटेशन' के कुछ तरीके बताए हैं। आप इन्हें प्रयोग में ला सकते हैं।

- भोजन करने वाली जगह का वातावरण शांत हो। आप रिलैक्स डाइनिंग टेबल या जमीन पर बैठकर भी खाना खा सकते हैं। कुर्सी पर बैठने पर दोनों पैर समानांतर और जमीन पर होने चाहिए।
- किसी भी प्रकार के भोजन से आप शुरुआत कर सकते हैं। यह सब्जी या फल का एक टुकड़ा भी हो सकता है।
- सबसे पहले आप दिल से सोचें कि क्या आप भूखे हैं? यदि आप सचमुच भूखें हैं, तभी यह क्रिया लाभदायक होगी।
- भोजन को अपनी उंगलियों से स्पर्श करें और इसके स्वरूप के बारे में सोचें। इसकी गंध और स्वाद को भी महशूस करें।
- भोजन की जो थाली आपके सामने हैं, उसमें स्थित अन्न को तैयार करने वाले किसान, दुकान तक पहुंचाने वाले ट्रक ड्राइवर, दुकानदार, भोजन पकाने वाले आदि के अथक परिश्रम के बारे में सोचें।
- सूक्ष्म स्तर पर अन्न के दाने को तैयार करने वाले चारों तत्व सूर्य, जल, मिट्टी, हवा के साथ साथ अन्न देने वाले पौधे के बारे में भी विचार करें।
- अब भोजन को मुंह में डाले। चबाने और निगलने से पहले जीभ को इसका स्वाद लेने दें।
- भोजन को चबाना शुरु करें। इस समय दिमाग को वहीं पर केन्द्रित रखें।
- 15 से 20 बार चबाने की कोशिश करें। दस से अधिक बार चबाने के बाद आपको अनोखा स्वाद मिलेगा।

उपरोक्त ध्यान रखने से आपका शरीर अधिक स्वस्थ होगा। ●

सिंहनाद

● सचखंड में मनाया गया श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का जन्मदिन

नांदेड-दशम् पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का 344 वां जन्मदिन 24 दिसम्बर 2009 को सचखण्ड श्री हजूर साहिब में बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर शहर के मुख्य मार्ग से नगर कीर्तन निकाला गया। इस नगर कीर्तन में शहर की जानी मानी हस्तियों ने बड़ी उत्साह से भाग लिया।

सर्वंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के जन्म दिन के अवसर पर साल दिन पूर्व से गुरुद्वारा सचखंड परिसर में प्रभात फेरी निकाली गई। दिनांक 24 दिसम्बर 2009 अमृतवेले घागरिया सिंघ जी ने गोदावरी नदी का पवित्र जल लाया। इस जल से ऐतिहासिक शस्त्र तथा सिंहासन साहिब की सेवा की गई। मुख्य जत्थेदार संत बाबा कुलवंत सिह जी की अरदास से धार्मिक दिवान प्रारम्भ किया गया। आसा दी वार की कीर्तन के उपरांत आदि श्री गुरुग्रंथ साहिब का मुख्यवाक लिया गया तथा संगत को दशम् पातशाह की कथा सुनाई गई और आरती की गई। अखण्ड पाठ और सप्ताह पाठ से आरम्भ किए गए तथा अमृत संचार किया गया।

शाम चार बजे गुरु महाराज की सवारी के साथ नगर कीर्तन निकाला गया। जिसमें, गुरु साहिबान के निशान साहिब, घोड़े, कीर्तन जत्थे, गतका अखाड़े शामिल हुए। इस नगर कीर्तन का पुष्प वृष्टी करके स्वागत किया गया। राष्ट्रीय सिख संगत-नांदेड़ इकाई की ओर से नगर कीर्तन का स्वागत बड़े श्रद्धा से किया गया। इस वक्त गिरिराज चक्रावर, जेठवानी, बाबूभाई ठक्कर, हरिश ठक्कर, नवीन भाई ठक्कर, इन्दरचंदनानी, लालसेठ, दत्ता कुलकर्णी, भावेस नागडा, चेतन चव्हाण, अरूण किनगांवकर, प्रा. उपेन्द्र कुलकर्णी, कूलप्रकाश लिखारी, विनोद मूत्तेपवार, सुरजीत सिंघ निर्मल सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस नगर कीर्तन का समापन वापस सचखंड में आकर हुआ। इस उपलक्ष में सचखंड का अनगर्ल भाग फूलों से सजाया गया था तथा बहाय परिसर में रूसवाई की गई थी। इस गुरपर्व में शामिल होने हेतु देश विदेशों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु सचखंड श्री हजूर साहिब नांदेड़ आए थे। यात्रियों के निवास की व्यवस्था सचखंड तथा गुरुद्वारा लंगर साहिब में की गई थी।

● दक्षिणी दिल्ली-शहीदी दिवस

अम्बेडकर भवन-रानी झांसी रोड नई दिल्ली में एक विराट शहीदी दिवस सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में दिल्ली की संस्था 'संत सिपाही विचार मंच' ने राष्ट्रीय सिख संगत के श्री पन्नालाल जी, समर्थ शिक्षा समिति के श्री मदन मोहन शर्मा जी, वर्ल्ड ब्राह्मण फेडरेशन के पं. सुनील अत्री जी व प्राचीन सन्यास आश्रम के महंत भोला गिरी जी के सराहनीय योगदान द्वारा सम्पन्न हुआ।

हिन्द की चादर श्री गुरु तेगबहादुर शीर्षक पर हुए निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को नगद पुरस्कार, स्मारिका, प्रशस्ति पत्र व मोमेंटो द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस प्रतियोगिता में समर्थ शिक्षा समिति के दो विद्यालयों, डी.ए.वी. के चार विद्यालयों व गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल के एक विद्यालय ने भाग लिया। श्री गुरु तेगबहादुर जी व उनके शिष्य भाई मतीदास जी, सतीदास जी व भाई दियाला जी को उनकी तिलक व जनेऊ की रक्षा हेतु अद्वितीय बलिदान को याद किया गया।

● राष्ट्रीय सिख संगत-मध्यप्रदेश

इन्दौर-राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय अध्यक्ष स. गुरचरन सिंह गिल जी के मध्यप्रदेश प्रवास के दौरान इन्दौर जिला

इकाई की बैठक स. इन्दरजीत सिंह खनूजा जी के निवास पर रखी गई। बैठक में प्रदेश अध्यक्ष स. कुलवंत सिंह सचदेवा, कार्यकारी अध्यक्ष स. अजीत सिंह नारंग विशेष रूप से उपस्थित हुए। बैठक में इन्दौर जिले के पुराने व नये कार्यकर्ता सभी उपस्थित हुए। साथ में नामदेव समाज, रविदास समाज, कबीर पंथी तथा अन्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। बैठक का संचालन स. जसपाल सिंह रील-प्रदेश सचिव द्वारा किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय का पुष्पमालाओं से भव्य स्वागत किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय संघचालक जी भी बैठक में उपस्थित थे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष स. गुरचरन सिंह गिल जी द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रीय सिख संगत का क्या दायित्व है विषय पर प्रकाश डाला गया। समाज को भी अपनी संस्कृति तथा युवा पीढ़ी को किस प्रकार समझाकर व संभालकर साथ लेकर चलना चाहिए विषय पर सभी का मार्गदर्शन किया। बैठक में प्रदेश अध्यक्ष स. कुलवंत सिंह सचदेवा द्वारा भी मार्गदर्शन दिया गया। इन्दौर जिले की गतिविधियों की जानकारी कार्यकारी अध्यक्ष स. अजीत सिंह नारंग द्वारा दी गई।

राष्ट्रीय सिख संगत द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की जानकारी प्रदेश सचिव स. जसपाल सिंह रील द्वारा बताई गई। सेवा कार्यों में सभी उपस्थित बंधुओं ने बढ़-चढ़कर योगदान देने का संकल्प लिया। प्रदेश अध्यक्ष द्वारा जानकारी दी गई की सेवा कार्य के तहत हाथ सिलाई मशीन का वितरण सिकलीगर समाज की विधवा व निराश्रित महिलाओं को किया जा रहा है। जिसके तहत म.प्र. के देवास, हरदा, खरगोन जिले के कई गांवों को दौरा करके 90 मशीनों का वितरण किया गया है तथा आगे भी यह कार्य करते हुए लगभग 200 सिलाई मशीनों का वितरण किया जावेगा।

● **भगवानपुर जिला खरगौन (म.प्र.)**-राष्ट्रीय सिख संगत के राष्ट्रीय अध्यक्ष स. गुरचरन सिंह गिल जी के म.प्र. प्रवास के दौरान खरगौन जिले की भगवानपुरा तहसील में दौरा किया गया। प्रवास के दौरान प्रदेश अध्यक्ष स. कुलवंत सिंह सचदेवा, प्रदेश सचिव स. जसपाल सिंह रील एवं खरगोन जिला संयोजक स. सतपाल सिंह भाटिया उपस्थित थे।

गिल जी ने आयोजित कार्यक्रम में गुरु गोबिन्द सिंह जी की जयंति पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष महोदय द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों द्वारा गुरुबाणी विचार एवं पाठ सुनाने को कहा, सिकलीगर बच्चों ने बखूबी मर्यादा सहित गुरुबाणी का पठन किया गया। प्रदेश अध्यक्ष सचदेवा जी द्वारा समाज का मार्गदर्शन किया गया। लगभग 300 सिकलीगर भाई बहनों ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर सभी के विचार सुने, राष्ट्रीय अध्यक्ष जी द्वारा सिकलीगर सिख समाज की विधवा, निराश्रित व अत्यंत गरीब महिलाओं को 25 हाथ सिलाई मशीनों का वितरण किया गया।

जारीकर्ता : **स. जसपाल सिंह रील**, प्रदेश सचिव (म.प्र.)

● **ग्राहक जागरूकता जरूरी**

प्रख्यात अर्थशास्त्री तथा समाजसेवी डॉ. बजरंगलाल जी गुप्त ने 'ग्राहक दिवस' के अवसर पर कहा कि अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत का मानना हैं कि ग्राहक हमारे लिए देवता के सदृश्य है। भारतीय संस्कृति में क्रेता और विक्रेता के बीच अर्थ एवं वस्तुओं के बीच विनिमय तथा शोषण करने की प्रवृत्ति नहीं होती है। ग्राहक तो साक्षात देवता के तुल्य होते हैं। परन्तु वर्तमान भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था में ग्राहक हितों का संरक्षण, संवर्धन तथा जागरूकता का होना परमावश्यक है। इसलिए आज देश की आर्थिक परिस्थिति का विश्लेषण करना जरूरी हो गया है। इसमें दोषपूर्ण सिद्धांत, कार्य प्रणाली तथा कार्य व्यवहार अत्यधिक चिंतन तथा मंथन की आवश्यकता है।

आज जब हम 90 के दशक से शुरु हुई अर्थव्यवस्था का अध्ययन करते है तो हमें भारतवर्ष का विशाल मध्यम वर्ग दिखाई पड़ता है। इस वर्ग का एकमात्र लक्ष्य धन का संग्रह है। जब देश की 70 प्रतिशत जनता 20 रुपये पर गुजारा करें तथा 30 प्रतिशत जनता देश के 85 प्रशित संसाधनों पर अधिकार हो तो यह कैसी व्यवस्था है। महात्मा गांधी, डॉ. लोहिया, पं. दीनदयाल उपाध्याय ने जिस सामाजिक समरसता की कल्पना की, वो कहीं-कहीं छोटे छोटे संगठनों में ही दिखाई पड़ती है।

'हरिद्वार महाकुम्भ विशेषांक'

कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुम्भ न होइ॥
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ॥

(श्री गुरुनानकदेव जी)

महाकुम्भ अंक के विशेष आकर्षण–

जब देवता और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था तब से भारतवर्ष में कुम्भ महापर्वों की परम्परा का शुभारम्भ हुआ। हरिद्वार नगरी आदिकाल से तपस्वियों, ऋषियों, गुरुओं, सन्तों और वीर पराक्रमी महापुरुषों की तपस्या स्थली एवं कर्मस्थली रही है। उनसे न केवल उत्तराखण्ड प्रदेश को बल्कि देश विदेश में रह रहे करोड़ों भारतवासियों को परिचित कराने का गौरवपूर्ण अवसर परमपिता परमात्मा ने आपको सौभाग्य से प्रदान किया है।

महाकुम्भ विशेषांक लयी अपणे इदारे, व्यापारक फर्म या कम्पनियां दे विज्ञापन देण दी कृपालता करो जी ।

विज्ञापन मूल्य एवं छपाई स्थान

1.	पिछला बहुरंगीय अन्तिम पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (19.5 X 26.5)	रु. 50,000
2.	कवर पृष्ठ क्रमांक 2 और 3	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (19.5 X 26.5)	रु. 40,000
3.	अन्दर बहुरंगीय पूर्ण पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (19.5 X 26.5)	रु. 35,000
4.	श्याम श्वेत पूर्ण पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (19.5 X 26.5)	रु. 20,000
5.	श्याम श्वेत आधा पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (10 X 13.3)	रु. 10,000
6.	श्याम श्वेत चौथाई पृष्ठ	प्रिंट ऐरिया सेंटीमीटर में (5 X 6.5)	रु. 5,000

सूचना

- चैक/ड्राफ्ट 'संगत संसार'–नई दिल्ली के नाम बनाकर 'संगत भवन' 4/28, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, सरस्वती मार्ग, कृष्णा मार्किट, नई दिल्ली–110 005 (दूर. 25728030, 24505289) पर भिजवाने की कृपा करें।
- विज्ञापन सामग्री कम्प्यूटर से निकली हुई अथवा बहुरंगीय छपी हुई हो तो छपाई में सुविधा रहेगी। छपने वाले चित्र भी छपाई की दृष्टि से बहुत ही अच्छे होने चाहिए। विज्ञापन छपवाने से पूर्व संस्था द्वारा लिखित वर्क आर्डर प्रेषित करना आवश्यक है।
- आदेश एवं सामग्री प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 20 मार्च, 2010 रहेगी। अत: कोरियर/रजि. डाक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए 7 दिन पूर्व प्राप्त करवाने की व्यवस्था करवाएं, ताकि सामग्री और विज्ञापन को उचित स्थान दिया जा सके।

भवदीय

स. चिरंजीव सिंह
राष्ट्रीय मार्गदर्शक

स. गुरचरन सिंह गिल
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अविनाश जायसवाल
राष्ट्रीय महामंत्री संगठन

बिहारी लाल
राष्ट्रीय महामंत्री

डॉ. अवतार शास्त्री
राष्ट्रीय मीडिया एवं सम्पर्क प्रमुख

स. सुखदेव सिंह नामधारी
प्रदेश अध्यक्ष–उत्तराखण्ड